ज्ञानामृत

अक्तूबर, 1988
वर्ष 24 ❋ अंक 4
मूल्य 1.75

नई दिल्ली – प्रधानमंत्री भ्राता राजीव गांधी जी को स्नेह, सहयोग और पवित्रता की प्रतीक राखी बांधने के पश्चात् ब्र०कु० भाई-बहनें उनके साथ एक ग्रुप फोटो में

मैसूर में शिक्षाविदों और युवाओं के सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्ज्वलित करते हुए ब्र० कु० मोहिनी बहन, दादी प्रकाशमणि जी, भाता श्री कृष्णा, मंत्री, तमिलनाडु सरकार, भाता चीकबोरैया, एम० एल० ए०, मैसूर के मेयर भाता शंकरलिंगे गोडा तथा ज्ञानामृत के मुख्य सम्पादक ब्र० कु० जगदीश चन्द्र जी।

दिल्ली के लेफ्टिनेंट गवर्नर भाता रमेश भण्डारी को राखी बांधने के पश्चात् उन्हें ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र० कु० शान्ति बहन।

पणजी (गोवा) – राज्यपाल महा-महिम डा० गोपाल सिंह को राखी बांधकर उन्हें आत्म-स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र० कु० शोभा बहन।

दिल्ली (करोल बाग) – विदेश मंत्री भाता नरसिम्हा राव जी को राखी बांधकर ब्र० कु० बाला बहन उन्हें आत्म-स्मृति का तिलक लगा रही हैं। साथ में खड़ी हैं ब्र० कु० आशा बहन।

भुवनेश्वर – उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम बी० एन० पांडे को आत्म-स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र० कु० निरुपमा बहन।

दिल्ली (करोल बाग) – केन्द्रिय राज्य मंत्री (खाद्य एवं उद्योग) भाता जगदीश टाइटलर को स्नेह सूचक राखी बांधते हुए ब्र० कु० पुष्पा बहन।

दिल्ली (शक्तिनगर) – केन्द्रिय स्वास्थ्य मंत्री भाता एम० एल० फोरा जी को पवित्रता की प्रतीक राखी बांधते हुए ब्र० कु० सुधा बहन।

दिल्ली (शक्तिनगर)- संघ लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष की धर्मपत्नी बहन एच० के० एल० कपूर को स्नेह सूचक राखी बांधते हुए ब्र० कु० सुधा बहन।

दिल्ली (चांदनी चौक) – न्यायाधीश भ्राता आर० एस० सरबरिया, अध्यक्ष, केन्द्र-राज्य सम्बन्ध आयोग को 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' योजना से अवगत कराते हुए ब्र० कु० जयप्रकाश।

मद्रास – बहन पी० सी० अकन्ना अलैक्जेन्डर को पवित्रता की प्रतीक राखी बांधते हुए ब्र० कु० लक्ष्मी बहन।

अम्बाला – भ्राता सूर्यभान जी, मंत्री, हरियाणा सरकार, बहन डा० कमला वर्मा, स्वास्थ्य मंत्री, हरियाणा सरकार, बहन कलावती, एम० एल० ए० को ईश्वरीय सन्देश देने के पश्चात् उनके साथ एक ग्रुप फोटो में ब्र० कु० सरोज बहन।

पटना – बहन उमा पाण्डे, राजस्व मंत्री, बिहार सरकार को पवित्रता की प्रतीक राखी बांधते हुए ब्र० कु० निर्मल पुष्पा बहन।

भुवनेश्वर – उड़ीसा के मुख्यमंत्री भ्राता जे० बी० पटनायक को राखी बांधते हुए ब्र० कु० सन्देशी बहन।

दिल्ली (शक्तिनगर) – न्यायाधीश भ्राता ए० एन० सेन को आत्म-स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र० कु० सुधा बहन।

दिल्ली (मालवीय नगर) – माइनारिटी कमीशन के सदस्य भ्राता होमी तालेयर खान को पावन राखी बांधते हुए ब्र० कु० भाग बहन।

मैसूर – दादी प्रकाशमणि जी, मैसूर शिक्षा विद् और युवा वर्ग सम्मेलन का उद्घाटन भाषण करते हुए।

बम्बई – "सर्व के सहयोग से सुखमय ससार" कार्यक्रम के अन्तर्गत मानव स्नेह सम्मेलन का उद्घाटन भ्राता वसंतदादा पाटिल जी के हस्तों द्वारा सम्पन्न हुआ, बी० के० गोदावरी बहन तथा बी० के० उषा बहन भी दिखाई दे रहे हैं।

बैंगलोर – सेवा केन्द्र का उद्घाटन पार्लियामेन्ट मेम्बर तथा भूतपूर्व मेयर भ्राता व्ही० एस० कृष्ण नैयर जी ने किया। इस अवसर पर मेयर शेशाद्री, मंत्री रघुपथी, उपमेयर गोविंदराज बी० के० सरला, बी० के० रोजी बहन भी दिखाई दे रही है।

चाँदनी चौक (दिल्ली) – बी० के० विमला बहन सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता आर० एन० मिश्रा, जी को राखी बाँधने के पश्चात् ग्रुप फोटो में बी० के० भ्राता जयप्रकाश व बी० के० इन्द्रा बहन भी दिखाई दे रहे हैं।

शक्ति नगर (दिल्ली) – बी० के० चक्रधारी बहन, निरंकारी बाबा भ्राता गुरु हरदेव सिंह जी को राखी बांधते हुए।

करोल बाग (नई दिल्ली) – बी० के० आशा बहन सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता वेंकटचलैया को पवित्रता सूचक राखी बांधते हुए।

इलाहाबाद – में उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति मुख्य न्यायाधीश भ्राता अभिताभ बनर्जी को बी० के० मनोरमा तिलक करते हुए।

आबू-पर्वत संग्रहालय पर सजाई गई चैतन्य झांकी का मनोरम दृश्य इसका उद्घाटन जिलाधीश भ्राता आशुतोष भार्गव जी ने किया।

अमृत-सूची

१.	दशहरा	१
२.	चर्चा एकता की (सम्पादकीय)	२
३.	भगवान् को अपना बच्चा बना लो	५
४.	निःस्वार्थ सेवा	८
५.	आध्यात्मिक सेवा समाचार (सचित्र)	९
६.	"प्यार"--जीवन आधार	१३
७.	मर्यादा ही जीवन का श्रृंगार है	१५
८.	दो शब्दों की कमाल	१७
९.	बाबा इन नयनों में....(गीत)	१७
१०.	देओ दान तो छूटे ग्रहण (चिन्तन)	१८
११.	स्थूल धन से श्रेष्ठ संतोष धन (कहानी)	१९
१२.	सचित्र सेवा समाचार	२०
१३.	नवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य	२५
१४.	कल्प-कल्प की आजी (कविता)	२७
१५.	सबसे बड़ा पुण्य	२७
१६.	शक्ति का स्रोत--'युवा'	२८
१७.	तकदीर जगाने का साधन (कविता)	२८
१८.	सेवा समाचार (सचित्र)	२९

मॉरिशियस के प्रधानमंत्री सर अनरुद्ध जगन्नाथ जी को स्नेह सूचक राखी बांधते हुए ब्र०कु० चन्द्रा बहन ।

दशहरा

हमारे देश में समय प्रति समय अनेक त्यौहार मनाये जाते हैं। हर एक त्यौहार का अपना-अपना महत्त्व है। इसी प्रकार दशहरा भी एक विचित्र व महत्त्वपूर्ण त्यौहार है। तो आईए, "दशहरा" के आध्यात्मिक रहस्य को जानें।

ऐसा माना जाता है कि किसी समय में दस मुखों वाला रावण नाम का एक अत्याचारी राजा हुआ जिसका नाश करने के लिए स्वयं परमात्मा ने अवतार लिया तथा उसे समाप्त किया जिसकी ही यादगार में "दशहरा" उत्सव मनाया जाता है। परन्तु यह बात विज्ञान द्वारा भी सिद्ध है कि दस मुखों वाला इंसान न तो धरा पर पैदा हुआ है, न वर्तमान समय में है और ना ही भविष्य में पैदा होने की सम्भावना है। वास्तव में दशहरे का अर्थ है कि दस (विकारों को) हरा अर्थात् हराया अर्थात् विजय प्राप्त की।

"राम" शब्द निराकार, सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा का प्रतीक है जो ही कलियुग अन्त में प्रजापिता ब्रह्मा के मानवी तन में अवतार लेकर सतयुगी नई दुनिया स्वर्ग की स्थापना करते हैं तथा हर नर-नारी को पांच विकारों पर जीत पहनाते हैं। इसीलिए तो दशहरे के दिन रावण का पुतला बनाकर उसे जलाया जाता है। किसी का पुतला बनाकर जलाना तो उसे अपना दुश्मन ही मानना है। तो रावण अर्थात् पांच विकार भी मानव-मात्र के दुश्मन हैं जिन्हें अब परमात्म-याद की अग्नि में जला देना है।

१. काम विकार—कामी वृति को समाप्त कर शुभ भावनाएं, शुभ कामनाएं रखकर सबको सुख देना है।

२. क्रोध को शुद्ध जोश व उमंग - उत्साह में परिवर्तन कर ज्ञान मार्ग में आगे बढ़ते चलो।

३. लोभ विकार—कहावत भी है—लोभी नर कंगाल है, दुःख पावत दुख देत। स्थूल सम्पत्ति का लोभ न कर ज्ञान रत्नों को जमा करने तथा बांटने के शौकीन बनें।

४. मोह विकार मकड़ी के जाले के समान है। इसके बजाए आत्माओं से सच्चा रुहानी आत्मिक स्नेह रखें जिसमें ही स्वयं सहित सर्व का कल्याण समाया हुआ है।

५. अहंकार—जिस प्रकार एक गेंद बार-बार जमीन से टकराती है और चोट खाती है। इसी प्रकार अहंकारी व्यक्ति भी बार-बार चोट खाता और दुःखी होता है। आओ, 'स्वमान' रूपी लिफ्ट में बैठकर 'अनुभव' रूपी बगीचे में पहुंचे और आनन्द, खुशी, शान्ति रूपी फल खाएं।

इस प्रकार, इन पांचों विकारों पर विजय पहनकर दशहरे के उत्सव को सार्थक करें। वर्तमान संगमयुग में हम सब आत्माओं के लिए परमात्मा शिव का यही संदेश है।

ब्र०कु० कमलमणि, कृष्ण नगर, दिल्ली

चर्चा एकता की

आज सारे विश्व में विभाजनवाद का ही बोलबाला है। पाश्चात्य देशों में परिवार, जो कि समाज की इकाई हैं, भी छिन्न-भिन्न होते जा रहे हैं। हमारे अपने देश में हरेक राजनीतिक दल में कई बार विभाजन हो चुका है। भारत देश का विभाजन तो हुआ ही, पाकिस्तान का भी विभाजन हो गया जिसके परिणाम स्वरूप 'बंगलादेश' नाम से एक अलग देश बन गया। आज सारा विश्व अमीरों (Have's) और गरीबों (Have-not's) में, पूंजीवादी (Capitalistic) देशों और साम्यवादी (Communists) देशों में, आस्तिकों और नास्तिकों में और विकसित (Developed) और अविकसित (Underdeveloped) देशों में बंटा हुआ है। कहाँ तक गिनायें? मानव में एकता न होने के कारण एक विस्फोटक स्थिति पैदा हो गई है। यहाँ तक कि विश्व के अस्तित्व को भी एक भयंकर खतरा पैदा हो गया है।

यदि आज विश्व में एकता हो तो संसार में इतना धन और अन्न है कि एक भी भाई भूखा नहीं रहेगा, एक भी बच्चा भूख से बिलखता दिखाई नहीं देगा और एक भी बीमार या बूढ़ा व्यक्ति बेसहारा या बेठिकाना नहीं रहेगा, न ही कोई बेरोजगारी या बेगानापन महसूस करेगा। आज अगर करोड़ों व्यक्तियों के पेट में भूख की अग्नि धधक रही है, गरीबी से बच्चों की आँखों से आँसू बह रहे हैं और उन्हें कोई खिलौना मिलने की बात तो छोड़िए, सूखी रोटी का टुकड़ा भी चबाने को नहीं मिलता तो इसका कारण यही है कि मानव-मानव में एकता नहीं है। एकता न होने के कारण और विभाजनवाद के अस्तित्व के कारण, भूमि में अल्प-प्राप्त धातुएं, सभी देशों के मेधावी मस्तिष्क वाले लाखों वैज्ञानिक, हर देश में बहुत से कल-कारखाने और सारे विश्व के करोड़ों सुदृढ़, सशक्त और सक्षम शरीर वाले नौजवान घातक और विध्वंसक, ऐसे अस्त्रों-शस्त्रों के निर्माण में लगा रहे हैं कि जल के नीचे व जल की सतह पर, पृथ्वी पर और उसके नीचे खन्दक खोदकर, चट्टानों पर और बर्फीले पहाड़ों पर तथा आकाश में और अन्तरिक्ष में भी गोला-बारूद ही सर्वव्यापक हो रहा है—किसलिए? मानव द्वारा मानव को मारने के लिए !—यहाँ तक आकर पहुँचा है विभाजनवाद।

सरकारें टैक्स लगाकर देशवासियों को नींबू की तरह निचोड़ रही हैं। उसका एक कारण यह है कि पुलिस के लिए, मिलिट्री के लिए और गोला बारूद के लिए दिनोंदिन अधिक पैसे की ज़रूरत होती जा रही है। और इतने गोले बारूद और मिलिट्री की आवश्यकता इसलिए है कि एकता न होने के कारण झगड़ा-रगड़ा है।

डाक्टर लोग कहते हैं कि मनुष्य के बहुत से रोग तनाव के कारण हैं। परन्तु देखा जाय तो तनाव का एक मुख्य कारण एकता के अभाव में परस्पर अन-बन, डाँट-डपट, रूष्टता-असन्तुष्टता, घृणा और द्वेष है। यदि एकता हो, प्रेम हो, परस्पर सहयोग और सहानुभूति हो तो बहुत-से रोग तो वैसे ही समाप्त हो जायेंगे।

मन, वचन, कर्म में भी एकता नहीं

हमने ऊपर एकता न होने के कारण परिवार देश राजनीति और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रही हानियों का संक्षिप्त उल्लेख किया है। परन्तु यदि हर मानव की अपनी स्थिति को देखा जायेगा तो मालूम होगा कि मनुष्य के अपने मन, वचन और कर्म भी एक नहीं हैं। वह कहता कुछ है और करता कुछ और ही है। **वह संकल्प कुछ करता है और करता उससे भिन्न ही कुछ है। स्वयं भगवान् को सामने रखकर किए वचन का पालन नहीं करता। कचहरी में शपथ पत्र अथवा प्रतिज्ञा पत्र (Affidavit) लिख कर देता है परन्तु उसके कर्म उसके अनुकूल नहीं होते।** कितने ही लोग हैं जो प्रातः स्नान-ध्यान के बाद सोचते हैं कि आज क्रोध नहीं करेंगे और मीठा बोलेंगे परन्तु आधा घंटा भी नहीं हुआ होता कि वे आगबगूला होकर किसी पर बरस पड़ते हैं।

किसी ने कहा है कि मन, वचन और कर्म का एक होना ही महानता का चिह्न है। वचन देने के बाद उस का पालन करना भी सच्चे, ईमानदार और वीर तथा निर्भय व्यक्ति का काम है। परन्तु आज यह एकता भी छिन्न-भिन्न हो गयी है। इसी एकता का भंग होना ही तो शुरूआत है जिस से आगे चल कर दल बदलना, देश के बटवारे की सोचना और अपने विस्फुटित मन से विस्फोट की सामग्री बनाना शुरू होता है।

मन और बुद्धि में भी एकता नहीं

यदि अधिक ध्यान देकर देखा जाए तो मालूम होगा कि **मनुष्य के अपने मन और अपनी बुद्धि में भी एकता नहीं है।** मनुष्य की बुद्धि निर्णय देती है कि वह विषय-भोगों से उपराम जीवन व्यतीत करे परन्तु उसका मन, बुद्धि से एकता न होने के कारण, ऐन्द्रिय भोगों के पीछे भागता है। जैसे मदारी का बन्दर डुगडुगी बजने पर हाथ में लाठी पकड़कर नाचता है वैसे ही मन विषयों पर मतवाला होकर इन्द्रियों के रस की ताल पर नाचता है। मन और बुद्धि की एकता न होने के कारण ही मनुष्य के मन में द्वन्द्व बना रहता है, संघर्ष चलता रहता है, उलझन की सी स्थिति रहती है और मनुष्य उल्टे-पुल्टे काम करके पश्चात्ताप करता है और भगवान् से कई बार क्षमा मांगने पर भी वही सर्प की टेढ़ी चाल चलता है। **जिसके मन और बुद्धि में एकता न हो उसकी बुद्धि जो थोड़ी-सी अच्छी बातें सीखती है, वे भी प्रायः उसके काम में नहीं आती। जो महान् व्यक्ति होता है, उसके मन और बुद्धि में एकता होती है। इसी कारण ही उसका व्यवहार श्रेष्ठ तथा सद्गुण-युक्त होता है। जिसके बुद्धि व मन में एकता हो, उसी के जीवन में ही शान्ति की अनुभूति होती है। मन और बुद्धि का संघर्ष तो मनुष्य को सुख की नींद भी नहीं सोने देता। उसे जेल के बन्दी से भी अधिक नचाता है।**

स्वयं मन में एकता और एकतानता नहीं

मन और बुद्धि की बात तो एक ओर रही, मनुष्य के मन में भी एकता और एकतानता नहीं रही। जैसे बन्दर वृक्ष की एक शाख से दूसरी शाख पर उछल-कूद करता रहता है, थोड़ी देर भी स्थिर होकर नहीं बैठता, वैसे ही आज मनुष्य का मन भी एकटिक, एक-तान अथवा एक-रस नहीं होता। एक बात को सुनते-सुनते अथवा सोचते-सोचते वह बीच में कई जगह और चक्कर लगा आता है। जैसे रेत के कण परस्पर निकट होने पर भी बिखरे रहते हैं और एक रेत-रूप होने पर भी अलग-अलग होते हैं, वैसे ही आज प्रायः मनुष्यों के विचार बालू-कणों की तरह अलग-थलग होते हैं। बहुत थोड़े ही लागों के विचार तेल की धार की तरह एक तार अथवा रेशम या सूत या ऊन के धागे की तरह एक तान होते हैं।

एकता और एकाग्रता अथवा एकता और एकतानता का भी परस्पर काफ़ी मेल होता है। मन की एकतानता अथवा एकाग्रता योगी का एक चिह्न है। एकाग्रता अथवा एकतानता अनेक विचारों को श्रृंखलाबद्ध कर उनमें एकता पैदा करती है और उनको सुदृढ़ तथा सशक्त बना देती है। रूई की अलग-अलग पोनियों को कात कर उनमें परस्पर मेल स्थापित करके उनका एक ही धागा बना लिया जाता है और फिर उन कई धागों का ताना-बाना बनाकर उससे वस्त्र बन जाता है अथवा कई धागों को एकता का रूप देने के लिए बट कर सुदृढ़ रस्सी बना ली जाती है। ऐसे ही जब विचारों में सामंजस्य (Harmony) पैदा कर अथवा उन्हें एक ही जोड़ देकर एकाग्रता अथवा एकतानता की स्थिति पैदा की जाती है तो मन बड़ा शक्तिशाली हो उठता है और ऐसे विचार योगी के विचार होते हैं परन्तु **आज मन की ऐसी एकाग्रता रूपी एकता, विचारों की सामंजस्य रूपी एकता अथवा संकल्पों की एकतानता रूपी एकता का भी संसार में अभाव होता जा रहा है।**

एकता के अभाव का मूल कारण—स्वार्थ

यदि सभी प्रकार के विभाजनवाद का विश्लेषण किया जाए और एकता के अभाव का कारण ढूँढ़ा जाए तो हम इस परिणाम पर पहुँचेंगे कि **मनुष्य का स्वार्थ दूसरों के प्रति उसके स्नेह, सहयोग, सहानुभूति, सहनशीलता, सम्मान भावना और उसकी सवेंदनशीलता का घातक होता है। उसका स्वार्थ उसे मानव से दानव बना देता है।** सतोगुण से रजोगुण या तमोगुण की स्थिति पैदा कर देता है और भाई-भाई के बीच में, पति-पत्नि के बीच में, बाप-बेटे के बीच में भेद, अनबन, मन-मुटाव, झगड़ा और अलगाव की स्थिति पैदा कर देता है। मनुष्य के मन और बुद्धि के बीच में जो ठन जाती है, उसका भी एक कारण यही होता है कि उसका मन कहता है कि मेरा स्वार्थ इस रीति पूरा होगा और बुद्धि या तो यह कहती है कि इस प्रकार का स्वार्थ ठीक नहीं और या यह कि इस तरह यह स्वार्थ पूरा नहीं होगा। मनुष्य के मन में जो एकतानता या एकाग्रता नहीं होती, उसका भी एक कारण यह है कि मनुष्य का मन सुख-साधन अथवा स्वार्थ की सिद्धि को कभी इधर और कभी उधर, कभी इसमें और कभी उसमें ढूँढ़ता है। अतः जब तक मनुष्य स्वार्थ-परक है, अथवा मतलब-परस्त है तब तक वह एकता के सूत्र में पिरोया नहीं जा सकता वह माला का मणका नहीं बन सकता।

हरेक फूल अपने में एक फूल ही तो है ; हरेक मोती अपने में एक मोती ही तो है। परन्तु यदि फूलों व मोतियों की माला बनानी हो तो ठीक उनके भीतर से, उनके पेट से एक छेद करना पड़ता है। तभी रूई के भिन्न-भिन्न पोनियों से एकतानता के बल से बना हुआ धागा उनमें भी एकता स्थापित कर सकता है। तभी वह मणके किसी भक्त के हाथ में जप का साधन बनते हैं अथवा किसी महात्मा के

गले का हार बनते हैं। इसी प्रकार जब तक मनुष्य के स्वार्थ को परोपकार की सुई से छेदा नहीं जाएगा, उसमें योग की एकतानता का सूत्र नहीं डाला जायेगा, तब तक एकता नहीं हो सकती।

अगर ईश्वरीय ज्ञान और योग का कोई विद्यार्थी अथवा अभ्यासी—पुराना हो या नया—अपने स्वार्थ में परोपकार की सुई से छेद कर उसे आर-पार नहीं होने देगा, तब तक वह भी एकता के सूत्र में नहीं बंध सकता। भले ही वह मोती हो या मोतिये का फूल, वह वैजयन्ती माला में नहीं पिरोया जा सकता। उसका स्वार्थ उसे मणका अथवा फूल ही बने रहने पर मजबूर कर देगा। भले ही वह मोती की झलक भी देगा या फूल की सुगन्धि भी परन्तु वह उस परमपिता के गले की माला से अलग ही रह जाएगा।

अगर ईश्वरीय ज्ञान और योग का कोई विद्यार्थी अथवा अभ्यासी— हो या नया—अपने स्वार्थ में परोपकार की सुई से छेद कर उसे आर-पार नहीं होने देगा, तब तक वह भी एकता के सूत्र में नहीं बंध सकता। भले ही वह मोती हो या मोतिये का फूल, वह वैजयन्ती माला में नहीं पिरोया जा सकता। उसका स्वार्थ उसे मणका अथवा फूल ही बने रहने पर मजबूर कर देगा। भले ही वह मोती की झलक भी देगा या फूल की सुगन्धि भी परन्तु वह उस परमपिता के गले की माला से अलग ही रह जाएगा।

पर-हित की सुई से स्वार्थ को छेदना आवश्यक

हमें यह मालूम होना चाहिए और याद रखना चाहिए कि एक स्वार्थ वह है जो देहाभिमानी व्यक्ति करता है और जो थोड़े ही समय के सुख-साधन-सम्मान आदि के लिए होता है और दूसरा स्वार्थ वह है जो आत्माभिमानी व्यक्ति, चिरस्थायी सुख-शान्ति और स्वमान के लिए करता है। जैसे देहाभिमान और देहीभिमान अन्धकार और प्रकाश की तरह परस्पर विरोधी हैं, वैसे ही प्राय: देहाभिमानी का देहार्थ स्वार्थ भी उसकी अपनी आत्माभिमानी स्थिति में किये गए स्वार्थ का विरोधी होता है। आत्माभिमानी का स्वार्थ तो पूरा ही तब होता है जब उसमें पर-हित समाया हुआ हो अर्थात् वह दूसरों के कल्याण, उनकी सुख शान्ति और उनके हित के लिए अपने स्वार्थ को त्याग कर भी प्रसन्न होता है। ऐसे ही स्वार्थ व परमार्थ में भी एकता होती है। यदि स्वार्थ को पर-हित से छेदा न जाए तो परमार्थ भी सिद्ध नहीं हो सकता। अत: यदि मनुष्य को यह याद रहे कि जिस सुख शान्ति व सन्मान को वह चाहता है, तो उसकी चिरस्थायी सिद्धि भी पर-हित से, न कि मतलब-परस्ती से, होती है तभी मनुष्य देहाभिमान-जनित स्वार्थ को पर-हित व परोपकार की भावना से परास्त करके एकता की स्थापना के निमित्त बन सकता है। **अत: जो विजयमाला के मणके बनना चाहते हैं, उन्हें यह भली भाँति याद रखना चाहिए कि अपना ही उल्लु सीधा करने की भावना से यह पद प्राप्त नहीं होगा। सम्मान की कामना से सेवा करने से भी यह श्रेय नहीं मिलेगा परन्तु अपने सुख-साधनों को सेवा में लगाने से और परोपकार की भावना से सेवा करने से विजयी वत्स बन सकेंगे तथा एकता के सूत्र में पिरोए जा सकेंगे।**

— जगदीश

(देविहाल — स्वेच्छात्मक सामाजिक सेवा संगठन सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए जेड० पी० के अध्यक्ष भ्राता देसाई जी, बी० के० आशा बहन तथा बी० के० महादेव जी देखाई दे रहे हैं।

केशोद (गुज)—ब्री० के० रूपा व बी० के० पुष्पा बहिन सर्व के सहयोग से सुखमय संसार के अन्तर्गत केशोद में यूको बैंक में स्टाफ के समक्ष प्रवचन के पश्चात् खड़े हैं।

"भगवान को अपना बच्चा बना लो"

बी० के० सूर्य, माउण्ट आबू

ब्रह्माकुमारी विदुषी सेवा केन्द्र इन्चार्ज है तथा योग युक्त हैं, उनकी वार्त्तालाप रानी बहन से होती है जो कि राजयोग की विद्यार्थी हैं।

रानी – विदुषी दीदी, आज कल हम सबके लिए क्या ईश्वरीय प्रेरणा है और उसके लिए हमें क्या करना चाहिए?

विदुषी – समय के ज्ञाता सर्वज्ञ परमात्मा अब यह चाहते हैं कि मेरे वत्स अब मेरे-समान बन जाएँ, क्योंकि प्रत्यक्षता का समय समीप आ रहा है। इसके लिए हमें अपनी प्लानिंग (योजना) बनानी चाहिए। एकान्त में जाकर यह सोचना चाहिए कि मुझे बाप की प्रेरणाएँ पूर्ण करने के लिए और क्या क्या करना चाहिए।

रानी – बाप-समान बनना तो आसमान छूने जैसा काम है। सच कहूँ तो वह तो अपने वश का है नहीं। अब तो कुछ सरल-सी बात होनी चाहिए जिसे बुद्धि भी तो स्वीकार करे।

विदुषी – बाप-समान बनने का अर्थ यह भी है कि "जैसा लक्ष्य हो वैसे ही लक्षण धारण कर लेना"। अर्थात् जो कुछ हम करना चाहते हैं कर लें।

रानी – हाँ, यह बात तो मन को कुछ सन्तुष्टि देती है। तो अब आप हमें कुछ राय दीजिए।

विदुषी – रानी बहन, योग को भी एक-रस रखने के लिए व पूरे दिन आनन्दित व भरपूर स्थिति में रहने के लिए मनन-शक्ति की परम आवश्यकता है। यदि किसी पुरुषार्थी के जीवन में योग व मनन साथ-साथ नहीं चलते तो उसे लक्ष्य को पाने में काफी देरी लग जाती है। क्योंकि योग तब ही सुन्दर व रसदायक होता है, जब मन ज्ञान से भरपूर हो। मनन की कमी, मन को खाली रखती है व खाली मन वैसा ही है, जैसा बिन तेल के हवाई जहाज़। अर्थात् खाली मन उड़ान नहीं भर सकता।

रानी – हाँ दीदी, मनन की बात है तो अत्यन्त आवश्यक, परन्तु हम उसमें अवश्य ही कमजोर हैं।

विदुषी – हमें अपनी स्थिति शेष-शैया पर मग्न, विष्णु-समान बनानी है। जहाँ चारों ओर परिस्थितियों की लहरें हों, जहरीला वातावरण हो। मालूम है, विष्णु किसमें मग्न हैं? ज्ञान मनन में व ईश्वरीय मिलन में तो इन दोनों के बिना कोई भी मग्न नहीं हो सकता।

रानी – हाँ, तो दीदी, कोई सरल सी विधि मनन की बताइये। क्योंकि नौकरी के कारण हमारा जीवन व्यस्त भी है और गृहस्थ में कदम कदम पर समस्याएँ भी तो हैं।

विदुषी – हाँ रानी देवी, मनन से मनुष्य का मनोबल बढ़ता है, उसकी बुद्धि दिव्य होती है। मनन से ही बाबा का ज्ञान अपना बन जाता है। जैसे भोजन को हज़म करने से 'अपना खून' बन जाता है। मनन, बुद्धि के लिए मानो पौष्टिक आहार है, परमधाम में उड़ने के लिए पट्रोल है, विघ्नों से लड़ने के लिए दिव्य शस्त्र है व मास्टर ज्ञान-सागर बनने का साधन है। इसलिए मनन पर हमें पूरा ध्यान देना चाहिए।

रानी – हाँ तो दीदी, अब आप मनन का सरल मार्ग सुझाइये।

विदुषी – रानी, मनन-शक्ति में ज़्यादा पुरुषार्थी कमजोर हैं। परन्तु यदि उनके पास दृढ़ लक्ष्य हो तो मनन-शक्ति बढ़ाना कठिन काम नहीं। मनन दो तरह का है – एक सेवा से सम्बन्धित व दूसरा स्व-उन्नति से सम्बन्धित अर्थात् स्वचिन्तन। सेवा से सम्बन्धित विषयों पर भी हमें चिन्तन करना चाहिए ताकि ज्ञान देते समय या प्रवचन के समय हमारा आत्म-विश्वास कम न रहे। परन्तु स्व-उन्नति व योग-अभ्यास के लिए स्वचिन्तन आवश्यक है। मनन से हमारी एकाग्रता भी बढ़ती है। इसके लिए हम आपको एक सरल सा उपाय बताते हैं।

आप कुछ समय निकाल कर एक अव्यक्त मुरली ध्यान से पढ़ें, फिर उसे रख दें और बिना देखे ८-१० लाइनों में उसका सार लिखें। यदि आप अपने सार लिखने से सन्तुष्ट नहीं तो दोबारा ध्यान से वही मुरली पढ़ें और बिना देखे उसका सार लिखें। यदि फिर भी आप सन्तुष्ट नहीं तो यही काम तीसरी बार करें। इससे आपका ज्ञान का बल बढ़ेगा, स्मरण शक्ति बढ़ेगी और एकाग्रता शक्ति का भी विकास होगा।

रानी – यह बात तो सरल है परन्तु एक ही दिन में इतना समय तो मैं नहीं दे सकती।

विदुषी – ठीक है, आप एक मुरली को एक हफ्ते का आधार बना लो। यह सार लिखने का काम आप दो-तीन दिन में करो। फिर जिस विषय पर वह मुरली है दो दिन में उस विषय पर विस्तार से लिखो। ध्यान रहे, लिखना

ही मनन शक्ति बढ़ाने का सुन्दर तरीका है। फिर दो दिन उसी बात का अभ्यास करो। इस प्रकार आपका एक हफ्ता सुन्दर चिन्तन व अभ्यास में बीत सकता है।

रानी – हाँ, यह युक्ति तो मन-भावन है। इसे तो हर व्यक्ति कर सकता है। इससे तो सारा दिन बाबा के महावाक्य हमारे मन पर छाये रहेंगे।

विदुषी – और इस प्रकार आपके पास अनेक विषयों पर विस्तृत ज्ञान भण्डार हो जाएगा जो सेवाओं में भी आपके काम आयेगा।

रानी – शुक्रिया दीदी, अब योग के कुछ सरल अभ्यास हमें बताईये।

विदुषी – ठीक है रानी। देखा जाता है कि ब्राह्मणों को भविष्य का नशा काफी कम रहता है। जबकि ब्रह्मा बाबा का वह नशा जग-प्रसिद्ध है।

रानी – हाँ, ठीक कहा आपने, दीदी।

विदुषी – तो हमें अपने भविष्य दिव्य स्वरूप व सम्पूर्ण स्वरूप का भी आह्वान करना चाहिए। अब वह कैसे करेंगे? चलो, अभी ही हम यह सुन्दर अभ्यास करते हैं।

विचार करो कि हमारा दिव्य स्वरूप विष्णु अन्तरिक्ष में दिखाई दे रहा है। जो अत्यन्त दिव्य, प्रकाशमान, कान्तियुक्त और आकर्षक है। भक्तगण नीचे से उसका साक्षात्कार करके भाव-विभोर होकर उनका आह्वान कर रहे हैं...

फिर दिव्य स्वरूपधारी तेजस्वी विष्णु धीरे-धीरे ऊपर से नीचे उतर रहे हैं और नीचे आकर हमारे सम्मुख खड़े हो जाते हैं।

और हमें याद दिलाते हैं, जानते हो, मैं कौन हूँ? मैं तुम्हारा ही स्वरूप हूँ, तुम और मैं एक ही हैं और हम उस स्वरूप को देखने में अत्यन्त मग्न हो जाते हैं, वो हमें देख रहे हैं व हम उन्हें। और फिर वह तेजस्वी मूर्त्त हमारे इस साधारण स्वरूप में प्रवेश कर लेते हैं और इस प्रकार हम बन जाते हैं दिव्य रश्मियाँ बिखेरते हुए तेजस्वी विष्णु, जो कि हमारा ही भविष्य स्वरूप है।

रानी – बहुत सुन्दर अनुभव हुआ मुझे इन चन्द क्षणों में। अब मैं रोज़ इसका अभ्यास किया करूँगी।

विदुषी – ऐसे अभ्यास से भविष्य के सारे गुण व शक्तियाँ हमारे जीवन में आने लगेंगे और प्रत्यक्षता के उस काल में, जब असंख्य भक्तों की भीड़ हमारे सामने होगी, हम अपने दिव्य-स्वरूप का आह्वान करा कर उन्हें साक्षात्कार करा सकेंगे।

और इसी प्रकार अपने अन्तिम सम्पूर्ण स्वरूप को भी अपने सम्मुख प्रकट (इमर्ज) करो और देखो कि उसमें व मुझमें क्या अन्तर है। इस तरह सम्पूर्ण स्वरूप का भी प्रतिदिन आह्वान करना चाहिए।

रानी – दीदी, बड़ी सरल विधि है ये, ऐसी ही कुछ अन्य विधियाँ बताइये।

विदुषी – इस बार हमने ईश्वरीय महावाक्यों में सुना कि अपने मास्टर सर्वशक्तिवान के टाइटल को याद करो तो सर्वशक्तियाँ तुम्हारी सेवाधारी बन जाएंगी। तो इसका अभ्यास इस प्रकार करें...

विचार करो कि ये देह ५ तत्वों का नहीं, प्रकाश का बना हुआ है और मैं ज्योति-स्वरूप आत्मा, राजा, भृकुटि सिंहासन पर विराजमान हूँ। राजा बन कर सिंहासन पर बैठ जाओ। फिर देखो मेरे सम्मुख मेरी आठों शक्तियाँ, आठ मिलिट्री कमान्डरों के रूप में विराजमान हैं और मन, बुद्धि महामंत्री भी बैठे हैं... व सर्व कर्मेन्द्रियां कर्मचारी भी हैं... इस प्रकार यह मुझ राजा का दरबार है। और ये सभी मेरे आदेश का इन्तजार कर रहे हैं।

अब राजा बनकर आदेश दो

मन शान्त हो जाओ... समेटने की शक्ति से सब संकल्पों को समेट लो... सामना करने की शक्ति बहादुरी से विघ्नों का सामना करो... आदि आदि। इस प्रकार योग को रमणीक स्वरूप प्रदान करो।

रानी – मज़ा आ गया दीदी, सचमुच कितना सुन्दर है हमारा यह अलौकिक दरबार। जब तक हम यहाँ राजा न बनें, वहाँ विश्व-महाराजन कैसे बनेंगे।

विदुषी – बस, हमें नशा हो कि मैं राजा हूँ, प्रकृति का भी राजा व सर्वशक्तियों का भी राजा। सर्व शक्तिवान की सन्तान शक्तिशाली होगी ही, बस, हमारी बुद्धि इसे स्वीकार कर ले।

रानी – दीदी अब मैं बाप से सर्व सम्बन्धों के अनुभव के बारे में जानना चाहूँगी। क्योंकि इस बार शिव बाबा ने इस बात पर काफी बल दिया है।

विदुषी – हाँ, इस अनुभव से भी कई आत्माएँ वंचित हैं। तो मुख्य रूप से बाबा से हमारे ८ सम्बन्ध हैं। बाप, शिक्षक, सद्गुरु, माँ, मित्र, बन्धु, बच्चा व प्रियतम्।

वास्तव में यह ही हमारा परिवार है। यदि हम स्वयं को बीच में खड़ा करें व चारों ओर हमारे ये आठों सम्बन्धी खड़े हों जो एक के ही भिन्न भिन्न स्वरूप हों तो कितना मनोरम दृश्य होगा!

रानी – आश्चर्य, सच, कितना अलौकिक दृश्य है यह! परन्तु जब सोचती हूँ कि भगवान् मेरा बच्चा है, बात मन तक उतरती नहीं।

विदुषी – बस, यही तो बात है। क्या हम नहीं जानते कि अनेक भक्तों ने भगवान को अपना बच्चा, अपना मित्र या

अपना प्रियतम माना और उन्हें उसी तरह के अनुभव भी हुए । संगम युग का तो वरदान ही यह है कि भगवान से जिस तरह का अनभव करना चाहो, वह स्वयं ही अनुभव कराने को उत्सुक है ।

रानी – परन्तु सर्व सम्बन्धों की जरूरत ही क्या है ? क्या बाप, टीचर व सदगुरु ही काफी नहीं है । बाप से वर्सा, शिक्षक से सम्पूर्ण ज्ञान व सदगुरु से पूर्ण मार्ग-दर्शन । और स्वयं शिव बाबा ही यह भी तो कहते हैं कि किसी एक सम्बन्ध के सम्पूर्ण अनुभवों से भी सर्व सम्बन्धों का रस प्राप्त किया जा सकता है ।

विदुषी – नहीं, बाबा कहते हैं, एक सम्बन्ध की भी कमी होगी तो वह खींचेंगा । परन्तु हमें तो भगवान को ही अपना संसार बनाना है । अर्थात् हमारा सम्पूर्ण प्यार, सम्पूर्ण ध्यान एक में ही जाए ।

रानी – परन्तु मुझे तो न बच्चे की जरूरत, न साजन का आकर्षण, फिर मैं ये सम्बन्ध क्यों जोड़ूँ ?

विदुषी – ठीक कहती हो तुम । हो सकता है किसी को किसी विशेष सम्बन्ध का आकर्षण न भी हो, परन्तु उस सम्बन्ध के अनुभव से तो वंचित रह जाएंगे । हो सकता है किसी को बच्चे की ज़रूरत न हो, परन्तु भगवान को अपना बच्चा बनाने का दिव्य अनुभव क्या फिर कभी हो सकेगा। संगमयुग पर हमारा कोई भी अनुभव छूट न जाए

रानी – हाँ, यह बात सत्य है । कोई भी अभाव असन्तुष्टता लायेगा ।

विदुषी – तो मैं आपके सम्मुख, "भगवान हमारा बच्चा है" – यह अनुभव कैसे करें, इसका कुछ चिन्तन रखती हूँ । इस तरह अन्य सम्बन्धों का भी अनुभव किया जा सकता है ।

• तो सर्व प्रथम तो हमारी बुद्धि यह स्वीकार कर ले कि भगवान अब भगवान नहीं, सूक्ष्म अव्यक्त रूप से बच्चा बनकर अब हमारी गोद में आ गया है ।

• **दूसरी बात** – हमें नशा हो–वाह, भगवान स्वयं मेरा बच्चा है ! जिसका बच्चा स्वयं भगवान हो, उसे चिन्ता क्या, उसे भय क्या ? जिसका बच्चा ही भगवान हो, उसे अन्य किसी की मदद की आवश्यकता ही क्या ? जिसका बच्चा ही भगवान हो, उससे अधिक भाग्यशाली कौन ? समस्त विश्व उसके भाग्य का गुणगान करेगा । इस प्रकार यह अलौकिक नशा हमारे अंग-अंग में समा जाए

• **तीसरे** – हमें सोचना है कि भगवान हमारा बच्चा बनकर हमारे घर में आया है तो उसके लिए हमारा कर्त्तव्य क्या है ? उसने तो अपने कर्त्तव्य पूरे किये व अन्त तक पूरे करेगा, वही अन्त तक हमारा सहारा रहेगा, उसके होते हमें कोई कष्ट नहीं होगा, बीमारी में भी वह हमारी सेवा करेगा, तो सदा रक्षक बनकर हमारे पास भी रहेगा । परन्तु हमें उसे पूरा वारिस बनाना है, हमारा सब कुछ उसी के लिए हो, हमारा सम्पूर्ण प्यार उस पर ही समर्पित हो । बस, दिन-रात हम उसे देखते ही रहें, देखते ही रहें। हमारी नज़रें उसे देखें बिना चैन न पावें, उसे हम अपने पास ही सुलावें ।

• **चौथी बात** – हमारा इस प्रकार चिन्तन हो –

वाह, मेरा बच्चा संसार में सबसे अधिक सुन्दर, सर्व समर्थ, सम्पूर्ण योग्य, सबसे अधिक गुणवान व समस्त विश्व का प्यारा है । मेरा बच्चा कुल का दीपक है, मेरा नाम रोशन करने वाला है, कुर्बान हूँ मैं अपने ऐसे लाल पर... ऐसे लाल को पाकर मेरी गोद खिल गई, मेरा आँचल भर गया, जीवन आनन्दित हो गया... मेरा आँगन महक उठा । मैं भगवान की माँ बन गई, वाह, मेरा प्यारा बेटा ! मेरा यह वत्स विदेश चला गया था, ५००० वर्ष बाद लौटा है और मेरे लिए इतनी सम्पत्ति लाया है कि मेरे अरमान पूर्ण हो गये, मेरे २१ जन्म सम्पूर्ण सुख-शान्ति व सम्पन्नता में बीतेंगे ।

• **पाँचवी बात** – अब वह भगवान नहीं, तुम्हारा बेटा है । तुम उससे सेवा भी ले सकते हो, पैर भी दबवा सकते हो, कार्य में भी मदद ले सकते हो । अब उस पर तुम्हारा अधिकार है, तुम ऑर्डर भी दे सकते हो कि जाओ बेटा, यह काम ज़रा कठिन है, इसे तुम ही कर सकते हो । वह तुम्हारा पूरा आज्ञाकारी बच्चा है । परन्तु वह तुम्हारे आदेश तब ही मानेगा, जब तुम भी केवल उसे ही अपना बनाओगे ।

• **छठी बात** – अब बच्चे के रूप में उससे भिन्न-भिन्न अनुभव करो – अपने साथ बैठाकर अपने हाथों से उसे भोजन खिलाओ... जब ऑफिस से थककर आओ तो उससे खेलो, थकान समाप्त... कभी उसे कन्धे पर बिठाओ व कभी सिर पर। कभी उससे रूह-रिहान (वार्त्तालाप) करो और उससे अपना मन बहलाओ। रोज उसका शृंगार करो। खुद स्नान करो तो साथ में उसे भी कराओ, उसे प्यार से दुलार करो। इस प्रकार भगवान हमारे पास तो आया ही है, परन्तु हमारा बनकर। अब भी यदि हमने उसे अपना सर्वस्व न बनाया तो क्या हम बुद्धिमान ठहरे। तो इस प्रकार उसे अपना बच्चा बना लें तो ये जीवन खिल उठे।

रानी – मैंने समझ लिया दीदी । कितना सरल तरीका है यह राजयोग का व ईश्वरीय प्यार से जीवन को ओत-प्रोत करने का ! आज से भगवान मेरा बच्चा हुआ । अब वही मेरे नयनों का तारा रहेगा, अब उसी की छवि मेरे नयनों में बसी रहेगी। धन्यवाद दीदी ।

नि:स्वार्थ सेवा

ब्र०कु० राजकुमार मित्तल, दिल्ली

सेवा का भाव है सेव्य (जिसके प्रति सेवा की जा रही है) उसके मंगल की भावना सहित किया हुआ कर्म। संकल्प, वाचा और स्थूल कर्म सेव्य को सुख पहुँचाये। उसका अहित सोचने, कहने और करने वालों से सेव्य को सदैव सतर्क और सन्बद्ध रह बचाना। सेवक की सेवा तभी सफल मानी जाती है जब वह सम्पूर्ण रूप से अपने सेव्य के प्रति समर्पित रहकर, स्वत: ही (बिना आदेश या आज्ञा की प्रतीक्षा के) सेव्य की इच्छा को जानकर तदनुकूल कार्य करता है। यह हुई सेवा।

संसार में जो भी प्राणीमात्र सेवक हैं, सही मायने में सेवा करने में उनका कोई न कोई, कहीं न कहीं स्वार्थ अवश्य समाया होता है। कोई तो प्रत्युपकार (return) की सूक्ष्म आकांक्षा रखता, कोई अपने समर्पण और सेवा की सराहना (यशेष्णा) की अपेक्षा रखता। आध्यात्म में भी भक्ति, शक्ति या वर अथवा अन्य कोई कामना – यथा सर्व आत्माओं को सुख मिले, शान्ति हो आदि आदि, रख सेवा (आराधना) की जाती है। यहाँ तक कि कर्मफल की इच्छा न रखते हुए दूसरे के प्रति (सद्) कर्म करने में यह सन्निहित है कि ऐसा भाव रखने से अक्षुण्ण (महान्) फल प्राप्त होता है। सर्व प्राप्तियाँ सहज हो जाती हैं।

सच तो ये है कि शरीर या शरीर भान में रहकर की गई सेवा नि:स्वार्थ हो ही नहीं सकती। नि:स्वार्थ सेवा में तो सदा देना ही होता है, लेना **नहीं**। **नि:स्वार्थ सेवा निरन्तर देते रहने की ही ऊँच स्थिति है।** मन, वचन, कर्म से निरन्तर सिखाना यानी देते **ही रहना**। कोई माने न माने, वैर करे तब भी मान-अपमान, निन्दा-स्तुति सब में सम (एक रस) स्थिति रख निरन्तर सेवा -- अर्थात् मंगल-कामना और शुभ-भावना द्वारा कल्याणार्थ कर्म, चलता ही रहे। हर समय, अवस्था और स्थिति में सदा कल्याण करते ही रहें। अहैतुकी कृपा (दया) सदा होती ही रहे, ये है नि:स्वार्थ सेवा।

ऐसी सेवा तो निष्काय, सर्व समर्थ, निराकार परमात्मा – सर्व आत्माओं के पिता ही कर सकते हैं और सदा करते ही रहते हैं। उनकी कृपा सदैव, सर्वत्र और सर्व के लिए उपलब्ध है। चाहे कोई परमात्मा को माने न माने, गाली दे या फूल चढ़ाए वह सब पर सदा दाता और कल्याणकारी दृष्टि रख अहैतुकी कृपा वर्षा निरन्तर करते ही रहते हैं।

वह परमात्मा स्वयं ही हम मनुष्यात्माओं को भी ऐसी नि:स्वार्थ सेवा करना सिखाते हैं और इसकी विधि है – शरीर भान छोड़ फरिश्तेपन की स्थिति में स्थित हो विश्वकल्याणार्थ कर्म में प्रवृत्त होना। ऐसी नि:स्वार्थ सेवा की ज्वलन्त मिसाल (Sample) हैं प्रजापिता ब्रह्मा जिनके पद चिन्हों पर चलकर इच्छुक आत्माएं ऐसी सेवाधारी बन सकती हैं।

सुखमय संसार की कल्पना को साकार रूप देने के लिये नि:स्वार्थ सेवाधारी फरिश्ते स्वरूप आत्माओं का सहयोग आज की अनिवार्यता है। आओ, हम सभी ऐसा सहयोग देने का प्रण लें।

गिदड़बाहा – भ्राता नरेन्द्र कुमार को बी० के० शीला बहन राखी बाँध रही हैं।

सोलापुर – बी० के० सोमप्रभा भ्राता महादेव महेंद्रकर मेयर सोलापुर को राखी बाँध रही हैं।

खेड़ा – बी० के० निर्मला डी० सी० एम० केमिकलज़ के सीनियर जनरल मैनेजर भ्राता राजीव सिन्हा को राखी बाँध रही हैं।

सिवानी मण्डी सेवाकेन्द्र पर बी० के० राजेन्द्र बहन एस० डी० एम० भ्राता लाल सिंह जी को पावन पवित्रता सूचक राखी बाँधते हुए।

मालवीय नगर (दिल्ली) – बी० के० भाग एवं बी० के० पुष्पा बहिन उद्योग राज्य मंत्री भ्राता एम० अरूणाचलम् के साथ रक्षाबंधन पर दिखाई दे रहे हैं।

पाण्डव भवन (दिल्ली) – बी० के० पुष्पा बहिन सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश भ्राता एम० एम० दत्त जी को पावन राखी बाँधते हुए।

कठमांडू (नेपाल) – बी० के० शीला बहन, त्रिभुवन विश्व विद्यालय के उपकुलपति भ्राता महेश कुमार उपाध्याय जी को पावन राखी बाँधते हुए।

शक्ति नगर (दिल्ली) – बी० के० सुधा बहन भ्राता एच० के० एल० कपूर (अध्यक्ष संघ लोक सेवा आयोग) को पवित्रता व स्नेह राखी बांधते हुए।

दिल्ली (चाँदनी चौक) – न्यायाधीश भ्राता वी० बी० इराडी, को राखी बाँधते हुए ब्र० कु० बिमला बहन जी।

पणजी (गोवा) – विधान सभा के उपसभापति भ्राता शंभू बांदेकर जी को बी० के० शोभा जी राखी बाँधते हुए।

बिलासपुर (म० प्र०) – बी० के० गीता बहन भ्राता राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल, विधान सभा अध्यक्ष (म० प्र०) को राखी बाँधती हुई।

कटक – बी० के० कमलेश बहन मुख्य न्यायाधीश भ्राता एच० एल० अग्रवाल (उड़ीसा हाईकोर्ट) को पवित्रता सूचक पावन राखी बांधते हुए।

होशियार पुर – विश्व-हिन्दू परिषद, द्वारा श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें ब्र० कु० ई० वि० वि० ने भी भाग लिया, जिसमें भ्राता कमल चौधरी संसद सदस्य तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति सम्मिलित हैं।

कुरुक्षेत्र – सूर्य ग्रहण के सुअवसर पर, ज्ञान सूर्य आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करते हुए, जिला एवं सत्र न्यायाधीश भ्राता एस० के० जैन।

भोपाल – कृष्णा नगर झोंपडियों में राखी बांधते बी० के० माधुरी बहन।

भरूच – बी० के० सुनिला बहन, सब जेल में कैदी भाईयों को स्नेह सूचक राखी बाँधते हुए।

रांची जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर आकाशवाणी के केन्द्र निर्देशक भ्राता रतिराम जी चैतन्य श्रीकृष्ण की झांकी का अनावरण करते हुए। बी० के० निर्मला जी परमात्मा शिव-बाबा की याद में।

उदयपुर (राज०) – बी० के० शील विकलांग स्कूल के बच्चों को पावन राखी बाँधती हुई। साथ में बी० के० आशा बहन व बी० के० दीपा बहन दिखाई दे रही हैं।

डोम्बीवली रक्षाबंधन के पावन पर्व पर बी० के० प्रमिला बहन सर्व के सहयोग से सुखमय संसार, विषय पर सम्बोधित करते हुए।

गाम देवी (बम्बई) – बी० के० हसा एवं बी० के० पन्ना सेन्ट्रल जेल बम्बई के कैदियों को राखी बाँधते हुए।

इन्दौर (सुभाषनगर) – सेवा केन्द्र की ओर से बी० के० मनोरमा कुष्ठ रोगियों को राखी बाँध रही हैं।

कैंउझर (उड़ीसा) – बी० के० बहिने, रिक्शा, चालक भाइयों के पावन राखी बांधती हुई।

बैतूल – बी० के० आशा दलित वर्ग को राखी बांधते हुए।

भरतपुर – रक्षाबंधन पावन पर्व पर बी० के० कविता बहन स्थानीय जामा मस्जिद में मुसलमान भाईयों को पवित्रता व विश्व बंधुत्व सूचक राखी बाँधने के बाद।

दुर्ग – बी० के० पूर्णिमा बहन, नारी निकेतन की प्रमुख शिक्षिका तथा अन्य कल्याओं को राखी बांध रही हैं।

आगरा – रक्षाबंधन के पावन पर्व पर जिला जेल–आगरा में बी० के० बहिनों द्वारा रक्षाबन्धन महत्व का भाषण ध्यान पूर्वक सुनते हुए कैदी भाई।

ढेंकनल (उड़ीसा) – बी० के० बहनों द्वारा, रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर अंधे, मूक व बधिर स्कूल के बच्चो को राखी बाँधने के पश्चात् ग्रुप फोटो।

भरतपुर (राज०) – बी० के० कविता बहिन व ममता बहिन (बाएँ से दूसरे) भ्राता लेफ्ट० कर्नल बाई० एस० राठौड़ को राखी बाँधने के पश्चात् सेवा केन्द्र पर दिखाई दे रही हैं।

सहारनपुर – बी० के० भगवती बहिन भ्राता कर्नल जे० एम० राय को राखी बाँधने के पश्चात् साहित्य प्रदान किया।

फिरोजपुर सिटी – बी० के० तृप्ता मेजर जनरल भ्राता एच० सी० पाठक को राखी बाँधते हुए।

जालंधर – बी० के० राज बहत केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों को पवित्रता की सूचक पावन राखी बांध रही है

लातूर – जिला पुलिस मुख्य अधिकारी भ्राता अजय कुमार जैन जी को बी० के० महादेवी ईश्वरीय सौगात दे रही हैं।

हासुर (तमिलनाड़) – बी० के० सरला तथा बी० के० कला बहिन जेल सुपरीटिंडेंट भ्राता शाम मुगेम जी को राखी बाँधते हुए।

गुलबर्गा – बी० के० विजय बहिन होमगार्ड की कमाडेन्ट भ्राता होमी ईरानी को राखी बाँधते हुए।

बुटवल (नेपाल) – में सबूजगण के कर्नल जी को राखी बाँधने के पश्चात् बी० के० कमला आत्म स्मृति का तिलक लगा रही है।

"प्यार – जीवन आधार"

ब्र० कु० आत्मप्रकाश, आबू पर्वत

एक कटु व्यक्ति, अति क्रोधी व्यक्ति भी कहता हुआ सुना जाता है कि भाई, मुझसे प्यार से तो बात करो । यद्यपि वह यह सोचने की कभी भी कोशिश नहीं करता कि दूसरे भी तो मुझसे यही कामना करते होंगे । परन्तु इस बात से यह सत्य तो स्पष्ट है ही कि अन्तरात्मा प्यार की प्यासी है । प्यार न मिलने पर वह कराह उठती है और प्यार के पीछे वह सर्वस्व लुटा देने पर भी तैयार रहती है ।

चारों ओर नज़र दौड़ाकर देखें तो संसार प्यार से ही तो चल रहा है । जहाँ इस प्यार का अभाव है, वहीं तनाव है, वहीं टकराव है, वहीं स्वार्थ है और वहीं जीवन में बिखराव है । यदि इस विश्व को प्यार के पानी से न सींचा जाए तो सचमुच ही यह विश्व वीरान हो जाए । प्यार एक बहुत बड़ी निधि है, प्यार एक बहुत अनुपम औषधि है जिससे मन में उपजित अनेक रोगों का उपचार किया जा सकता है ।

एक बच्चा जन्म लेते ही माँ के प्यार में पलने लगता है । ज़रा संसार की कुछ घटनाओं की ओर नज़र दौड़ाएँ, जिन बच्चों को बचपन से किसी भी कारणवश माँ-बाप के प्यार से वंचित होना पड़ता है, उनकी मनोदशा जीवन भर कैसी रहती है! प्यार की भूख बीज के रूप में सदा ही विद्यमान देखने में आती है – कहीं जीवन निराशा से भरा मिलता है तो कहीं जीवन में उदासी छा जाती है और वे कहते पाये जाते हैं कि काश, उन्हें माँ का प्यार मिला होता! कितना विशुद्ध है यह मातृ-प्रेम!

एक रोगी, डाक्टर के पास जाते ही यदि प्रेम का व्यवहार पाता है तो उसके रोग की व्याकुलता तो कम से कम नष्ट हो ही जाती है । एक कर्मचारी यदि अपने अधिकारी का प्रेमपूर्ण व्यवहार पाता है तो उसकी कार्य क्षमता तो बढ़ ही जाती है । इस प्रकार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हम देखते हैं कि प्रेम मनुष्य जीवन का आधार है ।

एक बच्चा जब दौड़ा-दौड़ा अपने बाप की गोद में जाने को होता है तो यदि उस समय बाप की प्रतिक्रिया विपरीत हो तो बच्चे के मन को ठेस लगती है । हम देखते हैं कि बच्चों के विकास में माँ-बाप का प्यार मुख्य भूमिका निभाता है । परन्तु यदि यह प्यार मोह का रूप ले लेता है तो विकास में बाधक बन सकता है, बच्चों को स्वछन्द बना सकता है । इसलिए प्यार के सत्य स्वरूप की जानकारी परमावश्यक है ।

संसार में विभिन्न कार्यों को, विभिन्न विभागों को सुचारू रूप से चलाने के लिए स्नेह की शक्ति की आवश्यकता दिखाई देती है । आज मनुष्य के रोब या अहं के कारण अनेक स्थानों पर निष्क्रिया, अकर्मठता, गैर ज़िम्मेदारी व तनाव दृष्टि गोचर होता हैं । इसलिए हमें चाहिए कि दूसरों की छोटी मोटी गलती को देख कर हम स्नेहपूर्ण व्यवहार को छोड़ न दें, नहीं तो हमारी भावना स्वयं हमारे लिए ही कठिनाई पैदा करेगी और जिससे निपटने के लिए फिर हमें अधिक शक्ति की आवश्यकता पड़ेगी ।

प्यार की शक्ति से किसी भी मनुष्य को बदला जा सकता है, उसे सहयोगी बनाया जा सकता है । परन्तु हमारे प्यार का आधार स्वार्थ न हो और न ही हमारा प्यार दिखावे मात्र हो और न ही दूसरों को ऐसा लगे कि इन्हें जब हमसे काम पड़ता है तो स्नेह दिखाते हैं, नहीं तो अपने अहं में ही चूर रहते हैं । स्वार्थवश उत्पन्न स्नेह सफलता प्राप्त नहीं कराता । हमारा स्नेह हमारे अनादि ईश्वरीय सम्बन्ध पर आधारित हो तो यह स्नेह हमारे लिए एक बड़ी शक्ति के रूप में सिद्ध होगा ।

परन्तु आज संसार में जिस ओर भी नज़र दौड़ाएँ, मनुष्य ने स्वार्थ को ही आधार बना लिया है । इस कारण आज प्यार भी नमक की तरह नमकीन हो चला है, प्यार में मिठास का अभाव होता जा रहा है और ये स्वार्थ एक बड़ी दीवार बनकर मनुष्य को एक दूसरे से दूर करता जा रहा है । परिवारों की ओर ही दृष्टि दौड़ाएँ तो थोड़े ही समय के बाद सब का प्यार बिखरने लगता है, सभी अपनी-अपनी ढपली लेकर अपना-अपना राग अलापने लगते हैं । इसका कारण स्वार्थ है । अतः यदि हम स्नेह को अविनाशी बनाना चाहते हैं तो स्वार्थ को इससे अलग कर दें ।

मूलतः प्यार को ३ भागों में बाँटा जा सकता है ।

प्रथम – विकृत प्यार – जो दैहिक रूप या गुणों के आकर्षण से हो जाता है । जो आरम्भ में गहरा प्यार प्रतीत होता है परन्तु उस गहरे कूएँ की तरह जिसमें गिरकर मनुष्य चकनाचूर हो जाता है। जिसमें वायदे होते हैं, परन्तु जो आगे चलकर घृणा, ईर्ष्या व वैमनस्य में

बदल जाता है । आज अधिकतर चारों ओर यही बदलता प्यार दिखाई देता है जिसका आधार मनुष्य-मन में उत्पन्न विकार हैं । जो कभी भी तृप्त न होने वाली अग्नि है तथा जो सच्चे प्यार को जलाकर रख देती है । इसलिए इस प्यार के बाद तलाक होते हैं और फलस्वरूप जीवन में घोर अशान्ति छा जाती है । इसलिए इस प्यार को न प्यार कहेंगे, न जीवन का आधार बल्कि सही अर्थों में यह मार है । इस मार से मारा गया प्राणी जीवन भर सुख की श्वाँस नहीं ले पाता ।

द्वितीय – मोहवश उत्पन्न प्यार – यह अपनेपन का प्यार है जिसका आधार मोह है । जो प्रत्येक परिवार में दिखाई देता है। परन्तु यह भी प्यार का बिगड़ा हुआ रूप है । यद्यपि आज इसे भी मनुष्य जीवन का आधार बना बैठे हैं परन्त यह भी मनुष्य को दुखी करता है, वियोग होने पर उदास करता है, मनुष्य चैन का अनुभव नहीं करता । इस प्यार में भी मनुष्य की एक दूसरे से कुछ कामनाएँ होती हैं और पूर्ण न होने पर अशान्ति पैदा होती है, निराशा अनुभव होती है । इसलिए मोहवश उत्पन्न प्यार भी वास्तव में प्यार नहीं बल्कि सूक्ष्म मार है ।

तृतीय – अनासक्त स्नेह – जो कि आत्मा का आत्मा से या आत्मा का परमात्मा से होता है, जिसमें न स्वार्थ है, न वासना और न मोह । जिसमें "मैं" का भाव नहीं होता, सभी के प्रति अपनापन होता है । इस स्नेह की सीमाएँ नहीं होतीं और स्नेह किसी भी कारणवश नष्ट नहीं होता ।

यही स्नेह परमात्मा का भी हम आत्माओं से है जिस कारण वह प्यार का सागर जाना जाता है । इस प्यार में परमानन्द है, परमसुख है और अथाह शान्ति है ।

योगियों के मन में इसी स्नेह का रस प्रवाहित रहता है । यह स्नेह ही उन्हें स्थिर-चित्त रखता है, उन्हें सबके स्नेही बनाये रखता है । अब विश्व को इसी स्नेह की आवश्यकता है । यही स्नेह मनुष्य का ही नहीं, अब सम्पूर्ण विश्व का आधार है ।

ईश्वर-कृत राजयोग इसी कला का सृजन करता है । राजयोग का आधार भी यही प्यार है और इससे वृद्धि भी इसी प्यार की होती है । अतः ऐसा सुखदायक सच्चा प्रेम सीखने के लिए राजयोगी बनो । ●

भिलाई नगर – भ्राता एम० एल० गुप्ता जनरल मैनेजर ए० सी० सी० को राखी बांधने के पश्चात् तिलक लगाते हुए बी० के० ऊषा बहन ।

संगरूर – बी० के० हरजीत बहन, जिलाधीश भ्राता विजय कैन को पावन पवित्रता सूचक राखी बाँध रही हैं ।

बड़ौत – सेवा केन्द्र की ओर से आयोजित प्रदर्शनी में बी० के० सुरेश जी भ्राता प्रमोद पाली, सनातनधर्म के अध्यक्ष को चित्रों की व्याख्या दे रहे हैं ।

हरिनगर (दिल्ली) सेवाकेन्द्र की बहिन बी० के० शुक्ला जी भ्राता राजेन्द्र अवस्थी, मुख्य सम्पादक, साप्ताहिक हिन्दुस्तान एवं कादम्बनी को राखी बाँधने के पश्चात् प्रसाद दे रही हैं ।

"मर्यादा ही जीवन का शृंगार है"

ब्र० कु० प्रफुल्ल कुमार, माउण्ट आबू

मानव जीवन ही सर्व प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। कहा गया है आत्मा को मनुष्य योनि केवल एक ही बार प्राप्त होती है। किन्तु आज वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक तर्कों के आधार पर यह स्पष्ट हो चुका है कि मनुष्य अन्य पशु योनि धारण नहीं करता, वह अपने अनेक जन्मों में मनुष्य शरीर ही धारण करता है। फिर इसके पीछे क्या रहस्य हो सकता है कि आत्मा अपने अनेक जन्मों में मानव शरीर एक ही बार धारण करती है? वास्तव में देखा जाए तो वर्तमान समय मानव का जीवन स्तर पशु तुल्य है। यहाँ तक भी कहा गया है कि वर्तमान समय मानव के अनेक कर्म पशुओं से भी निकृष्ट हैं। ऐसे अनेकानेक समाचार आज हम नित्यप्रति पढ़ते व सुनते ही रहते हैं। दहेज, नारी दहन, हत्या, लूट-खसूट, चोरी-डकैती, मादक पदार्थों के सेवन, अश्लील साहित्य के लेखन व पठन, अश्लील फिल्मों के प्रदर्शन आदि अनेकानेक दुष्प्रवृतियों ने आज समाज को ही नहीं वरन् सम्पूर्ण मानव जाति को प्रदूषित कर दिया है और दिन- प्रतिदिन मानव रौरव नर्क के गर्त में गिरता ही जा रहा है। स्पष्ट है उसके जीवन के अन्दर आज दैवी मर्यादाओं का सर्वथा अभाव हो गया है। आज प्रत्येक मावन काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, भेद-भाव आदि के वशीभूत हो गया है। किन्तु यदि जीवन को सुख- शान्तिमय, दिव्य एवं अलौकिक बनाना हो तो हमें उन दिव्यगुणों का ज्ञान होना परमावश्यक है जिनके माध्यम से हम अपने जीवन को ही नहीं वरन् समस्त विश्व की मनुष्यात्माओं के जीवन को सुखमय बना सकें।

सुखमय जीवन के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण यदि आज हमारे सामने उपलब्ध हैं तो वह हैं श्रीकृष्ण, श्री राम, श्री नारायण, श्री लक्ष्मी व अनेकानेक देवी देवताएं। आज हमारे सामने उनकी मूर्तियां एवं उनके श्रेष्ठ एवं मर्यादित जीवन कहानियों से भरे शास्त्र ही उपलब्ध हैं। यही कारण है कि आज मानव उनकी मूर्तियों के दर्शन मात्र से स्वयं को सौभाग्यशाली मानता है और उनकी श्रेष्ठ जीवन कहानियों को पढ़ने से मन आनन्द अथवा आह्लाद का अनुभव करता है। यदि हम उन महान् देवी देवताओं के जीवन का अध्ययन कर दिव्यगुणों एवं श्रेष्ठ मर्यादाओं को अपने जीवन में धारण करें तो हमारा जीवन भी निस्संदेह सुखमय बन जावेगा।

मनुष्यात्मा जब अपने जीवन-क्रम में क्रमशः एक शरीर छोड़ दूसरा शरीर धारण करती है तो उसके अन्दर स्थित शान्ति, आनन्द अथवा दिव्यगुणों का क्रमशः ह्रास होता जाता है और वह अपने अन्तिम जन्म में सबसे ज्यादा दुःखी व अशान्त हो जाती है। ऐसे समय मनुष्यात्माओं को सत्य मार्ग प्रदर्शित करने हेतु परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के साकार शरीर में अवतरित हो मनुष्यात्माओं को उनकी अनादि आदि अवस्था शान्ति, आनन्द, प्रेम, रायल्टी अथवा दिव्यगुणों से युक्त जीवन का ज्ञान कराते हैं। यदि आत्मा अपने इस अन्तिम जन्म में परमात्मा को पहचान उनसे सर्व सम्बन्ध जोड़ अपने जीवन में मर्यादाओं एवं दिव्यगुणों को धारण करें तो वह अपने आदि अनादि दिव्यगुणों से युक्त श्रेष्ठ दिव्य जीवन को प्राप्त कर सकती है। इस जन्म के लिये ही कहा गया है कि आत्मा मनुष्य योनि एक ही बार धारण करती है चूँकि इस जन्म में ही उसे दिव्य जीवन जीने की कला का वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है। तो हम प्रस्तुत लेख में उन दिव्य गुणों एवं मर्यादाओं का वर्णन कर रहे हैं जो परमप्रिय परमात्मा शिव ने पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के मुखारविंद से हमें प्रदान की हैं। तो प्रस्तुत है परमप्रिय शिव पिता के द्वारा दी गई मधुर शिक्षाएं अथवा श्रीमत –

१. सदा ही होली हंस की भांति हर एक के गुण ग्रहण करते हुए गुणवान बनना है। परचिन्तन पतन की जड़ है आत्मचिन्तन उन्नति की सीढ़ी है। इसलिए परचिन्तन छोड़ आत्मचिन्तन करना है। स्वयं को आत्मा निश्चय कर देह-भान को भूलना है। सभी को एक पिता की सन्तान आत्मा मानते हुए पवित्र भाई-भाई की दृष्टि से देखना है।

२. "हियर नो ईविल, सी नो ईविल, टॉक नो ईविल..." के सिद्धान्त को जीवन में अपनाना है। जो बात काम की न हो उसे सुनी अनसुनी कर दो। कभी भी सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास न करें। यदि कोई उल्टी बात सुनाए भी तो एक कान से सुन दूसरे से निकाल दें।

३. कभी भी किसी से बदला लेने की भावना नहीं रखनी है। किसी से भी नफरत वा घृणा नहीं करनी है। किसी का भी तिरस्कार नहीं करना है। अपना स्वभाव सरल बनाना है। कोई भी घमण्ड न हो। निरअहंकारिता व नम्रता को धारण करें।

४. मुख से सदा मधुर बोल ही बोलने हैं। कभी भी

दुःख देने वाले बोल अर्थात् पत्थर मुख से नहीं निकालने हैं। कभी भी किसी की निंदा नहीं करनी चाहिए। अगर कोई हमारी निन्दा भी करता है तो उसे अपना मित्र समझें। कहा भी जाता है–"निन्दा हमारी जो करे मित्र हमारा सोई"। छोटा हो या बड़ा किसी से बात करते समय सदा ही "आप" शब्द प्रयोग करें।

५. जोर से खिलखिलाकर हंसना भी रायल्टी नहीं है। इसलिए सदा ही देवी-देवताओं के समान चेहरे पर हल्की मुस्कराहट हो।

६. कहा गया है कि क्रोध पानी के मटके को भी सुखा देता है। हमारा स्वभाव सदा ही शीतल और सरल हो। क्रोधाग्नि में कभीं भी नहीं जलना है।

७. हमारे बोल मधर और शीतल हों। हम अपने भाव को कम शब्दों में, स्पष्ट और धीरे बोल कर व्यक्त करें। "कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो" के सिद्धान्त को अपने जीवन में धारण करें।

८. हमारा भोजन शुद्ध और शाकाहारी ही हो। जो भोजन हम देवताओं को भोग लगाने में प्रयुक्त करते हैं हमें भी वैसा ही भोजन ग्रहण करना है।

९. कभी भी किसी की उन्नति देखकर उससे रीस नहीं करनी है। रेस करो किन्तु रीस नहीं।

१०. कभी भी किसी स्त्री अथवा पुरुष के प्रति देह दृष्टि न हो। देह देखने से मन में विकारी ख्यालात उत्पन्न होते हैं, अतः आत्म-स्वरूप में पवित्र भाई-भाई की दृष्टि से देखो। कहा भी गया है प्योरिटी ही रॉयल्टी है।

११. गन्दी फिल्म अथवा सिनेमा कभी भी न देखें एवं अश्लील साहित्य का भी अध्ययन न करें। इससे बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। जिस प्रकार से अशुद्ध भोजन से मनुष्य का शारीरिक स्वास्थ्य खराब हो जाता है उसी प्रकार से अशुद्ध साहित्य एवं फिल्म से मनुष्य का मन भी अस्वस्थ हो जाता है।

१२. कहा जाता है "सादा जीवन उच्च विचार"। अतः हमारे मन में चलने वाले विचार श्रेष्ठ एवं उच्च कोटि के हो। व्यर्थ की बातों में बुद्धि नहीं लगानी है। इसे ही रूहानी रॉयल्टी कहा जाता है।

१३. हमारे मुख से निकलने वाले बोल सदा रत्न के समान हों। कांटों के समान बोल बोलकर किसी को दुःख मत दो। इसलिए कहा गया है बोल के घाव तीर और तलवार से भी गहरे होते हैं।

१४. सदा ही विश्व-कल्याण की भावना मन में हो। सब मेरा-मेरा छोड़ विश्व सेवा की दृष्टि रखनी है।

१५. पुरुषों को चाहिए कि वे माताओं और बहनों का आदर कर उन्हें आगे रखें।

१६. कभी भी व्यर्थ बातों पर वाद-विवाद नहीं करना है। सारी दुनिया के सच्चे-सच्चे मित्र बन किसी से शत्रुता नहीं रखनी है। सभी के साथ प्यार एवं नम्रता का व्यवहार हो।

१७. कभी भी लॉ अपने हाथ में नहीं उठाना है। कानून का पालन करना और कराना है न कि उसका उल्लंघन।

१८. बड़ों की श्रेष्ठ आज्ञा का सदा ही पालन करना है। बड़े हों या छोटे, उनका सदा ही आदर करना है।

१९. हमारे स्वभाव में सहनशीलता हो। मान-अपमान दुःख-सुख, सर्दी-गर्मी, हार-जीत सबमें समान रहना है।

२०. सदा ही अपने घर का वातावरण ऐसा बना कर रखें कि लगे यहाँ तो स्वर्ग है। यदि छोटे बच्चे चंचलता भी करते हैं तो क्रोध में आकर उन्हें थप्पड़ नहीं मारना है। जितना हो सके उन्हें प्यार से समझाओ। बच्चे प्यार से सुधरते हैं, मार से नहीं।

२१. वेष-भूषा का प्रभाव दूसरों की दृष्टि और वृत्ति पर पड़ता है। इसलिए हमारी वेष-भूषा ऐसी हो जो देखने वाले हमें पवित्र दृष्टि से ही देखें। बहुत ही सिम्पल रहना है, ज्यादा फैशन न करें।

२२. यदि कोई हमारे ऊपर क्रोध करे तो उस पर फूलों की वर्षा करो। स्वयं सदा सन्तुष्ट रह दूसरों को भी सन्तुष्ट करना है।

२३. कहते हैं तन-मन-धन सब तेरा क्या लागे मेरा। अतः हमें अपनी चल एवं अचल सम्पत्ति का मालिक भगवान को समझना है। अपनी सम्पत्ति को ट्रस्टी होकर सम्भालना है। व्यर्थ खर्च न हो, अमानत में ख्यानत न हो इसका ध्यान रखें।

२४. पैसे की लेन-देन पाप आत्माओं से नहीं करनी है। यदि हमने किसी को पैसा दिया और उसने जाकर शराब पिया, कोई बुरा काम किया तो उसका पाप भी हमारे ऊपर ही चढ़ेगा।

२५. कभी भी कैसी भी भयानक परिस्थिति आ जाए, साहस एवं दृढ़तापूर्वक उसका सामना करना है। एक ईश्वर पर विश्वास रख कभी भी घबराना नहीं है।

२६. सम्पूर्ण अहिंसक बनना है। काम विकार भी हिंसा है। इसलिए तुम्हें सम्पूर्ण पवित्र बन औरों को पवित्रता धारण करने में मददगार बनना है। काम और क्रोध तो नर्क के द्वार हैं।

यदि हम सब उपर्युक्त ईश्वरीय मर्यादाओं को अपने जीवन में अपना लें तो वह दिन दूर नहीं जब इस धरा पर एक सुन्दर सुखमय संसार होगा। कहा भी गया है–"संयम और नियम ही जीवन की शोभा है"।

दो शब्दों की कमाल

ब्र० कु० जगरूप, कृष्णा नगर, दिल्ली

सन् १९६६ में जुलाई मास की सायंकाल का समय था। सूर्य की किरणों की रोशनी धीरे-धीरे कम होती जा रही थी और रात्रि का अन्धकार सूर्य की किरणों को विदाई देता हुआ स्वयं उसका स्थान ले रहा था। वातावरण पूर्ण शांत था। उन दिनों मेरी लौकिक सर्विस मिलट्री में थी। मैं अपनी मिलट्री वर्दी उतार कर सिविल कपड़े पहन कर अपने १५-२० साथियों सहित ७-३० बजे से ८-३० बजे तक मनोरंजन हाल में चला गया, जहां पर और भी साथी बैठे थे। हमारे में से कुछ कैरमबोर्ड खेलने लग गये और कुछ ताश खेलने लग गये। हमारे बीच में एक साथी सिपाही धर्मपाल नाम का था जो बहुत शांत रहता था वह भी खेल में शामिल था। धर्मपाल शांत तो था ही परन्तु कई दफा उसके चेहरे से ऐसा प्रतीत होता था कि मानो वह बहुत गहरी चिन्ता में डूबा हुआ हो। उसका कारण था कि बचपन में ही उसके लौकिक पिता का देहांत होने के कारण वह लौकिक परिवार से बेसहारा था।

मनोरंजन के हाल में हम सभी खेल खेलने में मस्त थे और आपस में चिटचैट की बातें भी चल रही थीं। बातों ही बातों में स्वाभाविक रूप से एक साथी ने धर्मपाल को दो शब्द कह डाले कि "**जो खुद ही बे सहारा है, वह दूसरों को क्या सहारा दे सकता है?**" यह शब्द सुनते ही उसके चेहरे पर अनेक प्रकार की रेखायें उभरने लगी और वह कुछ समय हमारे साथ ही बैठा रहा और अपने चेहरे पर बनावटी मुस्कराहट भी लाता रहा ताकि हमारे में से कोई यह समझ न पाये कि धर्मपाल इन दो शब्दों के कारण कुछ करने वाला है। परन्तु वह अंदर ही अंदर कुछ और प्रतिज्ञा कर चुका था जिसका हमें किसी को भी एहसास न था! धर्मपाल हमारे पास १५-२० मिनट बैठने के पश्चात् उठा और यह कह करके कि "दोस्तो, मैं अभी आया", वह वहां से चला गया।

थोड़ी देर के बाद एक सिपाही स्नान घर में गया। अन्दर घुसते ही धर्मपाल की लटक रही लाश उसके माथे से टकराई। वह जोर-जोर से शोर मचाने लगा। मनोरंजन कर रहे हम सभी साथी वहां पहुँचे और बैटरी (टार्च) की लाईट से देखा तो धर्मपाल की लाश लटक रही थी।

मुझे भी मेरे जीवन में दो ही शब्द पढ़ने को मिले जिससे मुझे कौड़ी से हीरे जैसा जीवन बनाने की राह मिली। किसी भी समय हमारे मुख से निकले दो शब्द तख्तनशीन भी बना सकते हैं और फांसी के तख्ते पर भी चढ़ा सकते हैं। मेरा जीवन धूम्रपान और मद्यपान का आदि हो चुका था जिसको छोड़ने के लिये मैंने कई बार देवी की मूर्त्ति के सामने प्रतिज्ञा की परन्तु असफल रहा। एक दफा मुझे एक पुस्तक मिली जो प्रजापिता ब्रह्मा-कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से सम्बन्धित थी। जब मैंने उस पुस्तक का पहला पन्ना खोला तो ऊपर की लाईन के सिर्फ यह दो शब्द पढ़े कि यह शरीर तुम्हारा मंदिर है और तुम इस मंदिर में एक चेतन मूर्त्ति हो। यह दो शब्द मेरे अंदर ऐसे तीर की तरह लगे कि मैं बार-बार यही सोचने लगा कि चेतन मूर्त्ति ने इस मंदिर में क्या-क्या डाल दिया। यह सोचते-सोचते मैं धूम्रपान और मद्यपान को संकल्प से भी भूल गया और एक अलौकिक आनन्द में खो चुका था और जीवन में ऐसे-ऐसे अलौकिक अनुभव होने लगे जिनको शब्दों में वर्णन करना असम्भव है। तो यह भी दो शब्दों की कमाल थी।

इसलिये हम अपने मुख से ऐसे शब्द बोलें जिससे दूसरों का जीवन हीरे जैसा बन जाये। मुख के शब्दों को श्रेष्ठ बनाने के लिये हमें पहले अपने संकल्पों को श्रेष्ठ बनाना होगा अर्थात् ज्ञानस्वरूप बनाना होगा। श्रेष्ठ अथवा ज्ञानस्वरूप संकल्प होंगे तो बोल और कर्म स्वतः श्रेष्ठ हो जायेंगे।

बाबा इन नयनों में...

तर्ज– बचपन की मोहब्बत को.....

बाबा इन नयनों में समाये हुये रहते हैं
बाबा इन कानों में सदा कुछ कहते हैं
सुनें जब अमृत वाणी, सन्मुख आ जाते हो
ऐसा लगता जैसे हमको समझाते हो
समझ कर हम बच्चे सेवा में रहते हैं
बाबा इन नयनों में.....

श्री मत की शिक्षायें शुभ कार्य कराती हैं
कर्म होते दैवी भाग्य वो बनाती हैं
नारायणी नशे में हम बच्चे रहते हैं
बाबा इन नयनों में.....

चलते फिरते लागे संग बाबा हमारे हैं
ज्ञान के रत्नों से हमें बाबा शृंगारे हैं।
पल-पल हम बच्चों को खुद आप सजाते हो.
बाबा इन नयनों में.....

ब्रह्माकुमार मोहन, आबू

देओ दान तो छूटे ग्रहण

(सूर्य ग्रहण के अवसर पर विशेष)

ब्र० कु० ओमप्रकाश, बाँदा

बड़े दिन की रात्रि में जेरोम नामक एक संत ईसा की जन्म भूमि बेथलेहम गये। भक्तिभाव से महात्मा ईसा के जन्म का ध्यान किया। अचानक ही आश्चर्यजनक ज्योति छा गई और सन्त को उसमें बाल ईसा का दर्शन हुआ।

बाल ने पूछा, "जेरोम, मेरी वर्षगांठ पर तुम मुझे क्या दे रहे हो? सन्त ने उत्तर दिया, "बाल महाप्रभु, मैं आपको अपना हृदय दे रहा हूँ।"

"ठीक, किन्तु कुछ और नहीं दोगे क्या?"

"ज़रूर दूँगा। जो सब मैं हूँ और जो सब मेरे पास अच्छा है, वह सारा आपका है।"

"अभी कुछ और बाकी है, जो मुझे चाहिये?"

"दिव्य बाल, मेरे पास और कुछ नहीं बचा, अब मैं आपको भला क्या दे सकता हूँ?"

"जेरोम, मुझे अपने पाप दान में दे डालो।"

"महाप्रभु, उससे क्या होगा?"

"मुझे अपने पाप दान में दे डालो ताकि उन सबको "वह" क्षमा करदे और तुम स्वर्ग के अधिकारी बन जाओ।"

अभी ११ सितम्बर को सूर्यग्रहण पड़ चुका है। और वर्ष में जड़ सृष्टि के नियमानुसार सूर्यग्रहण तथा चन्द्रग्रहण होते रहते हैं। यह ग्रहण तब पड़ते हैं जब पृथ्वी-सूर्य अथवा पृथ्वी-चन्द्रमा के मध्य चन्द्रमा या सूर्य क्रमशः मध्य में पड़ जाते हैं। इन दिनों में जो मान्यताएं सर्व समाज में प्रचलित हैं वह इस प्रकार हैं कि ग्रहण पड़ते समय लोग बाहर नहीं निकलते। फिर नदी, तालाब, कुंए अथवा घरों में ही स्नान करते हैं। गर्भवती महिलाओं को तो कठिन हिदायतें रहती हैं कि वे ग्रहण के अवसर पर बाहर न निकलें अन्यथा विकलाँग बच्चे पैदा हो सकते हैं। साथ ही ग्रहण के ठीक बाद अछूत कहे जाने वाले लोग "सूप" लेकर आते हैं और दरवाज़ों पर दस्तक देते हैं, "देओ दान तो छूटे ग्रहण।"

अब लोग "सूर्य ग्रहण व चन्द्र ग्रहण" का ठीक आध्यात्मिक रहस्य न जानने के कारण उपरोक्त चलन चलते रहते हैं और अन्न इत्यादि दान कर तथा स्वयं जल से स्नान कर अपने कर्त्तव्यों की इति समझ लेते हैं।

प्रश्न उठता है कि इस सम्बन्ध में अल्पज्ञ मनुष्य की बुद्धि का ताला खोले कौन? तो इन बातों का ठीक उत्तर देने के लिये संगमयुग पर ज्योति स्वरूप, सर्व आत्माओं के परमपिता परमात्मा शिव को आना पड़ता है। तो इस सम्बन्ध में परम प्यारे शिव बाबा ब्रह्मा तन के माध्यम से कहते हैं, "मीठे बच्चो, तुम सब काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, देहाभिमान व आलस्य रूपी राहूओं और केतूओं के ग्रहण जाल में फँस शूद्र अर्थात् अछूत यानी छूने योग्य भी नहीं, रह गये हो और अपने देवत्व पद तथा सूर्यवंशी व चन्द्रवंशी घराने की मर्यादाओं को तोड़े चले जा रहे हो अर्थात् आध्यात्मिक रूप से तुम सभी विकारों की ग्रफ्त में फँस मानसिक रूप से विकलांग हो गये हो, कंगाल हो गये हो। अब मैं आगया हूँ तुम सबको ग्रहण से मुक्त कराने और तुम्हें इस बात की युक्ति बताने कि कैसे तुम सब विकारों रूपी लगे ग्रहण से मुक्ति पाकर पुनः मुक्ति और जीवनमुक्ति का अधिकार प्राप्त करो और बन जाओ पुनः देवी-देवता और पहुँचो पुनः अपने सूर्यवंशी व चन्द्रवंशी घरानों में।"

तो शिव बाबा अर्थात् "वह" जिसके बारे में क्रिश्चियन धर्म के संस्थापक बाल ईसा ने संत जेरोम द्वारा ध्यान करने पर कहा था, "मुझे अपने पाप दान में दे डालो ताकि उन सबको "वह" अर्थात् बिन्दुरूप, ज्योति स्वरूप परमात्मा शिव अर्थात् धर्मराज क्षमाकर दें और तुम स्वर्ग के अधिकारी बन जाओ।

तो वही शिव बाबा वर्तमान संगमयुग पर हम सब बच्चों को आकर कह रहे हैं, "देओ दान तो छूटे ग्रहण।" अर्थात् मेरे बच्चो, तुम काम-क्रोध आदि समस्त पाप कर्मों को प्रेरित करने वाले विकारों को मुझे दान में दे दो और मेरे द्वारा दिये ईश्वरीय ज्ञान की गंगाओं और सरिताओं में नित्य स्नान कर पवित्र बन जाओ। पवित्र बनने से तुम सब स्वतः राहू-केतू सदृश विकारों से मुक्त हो जाओगे और पुनः अपने सूर्यवंशी व चन्द्रवंशी घरानों अर्थात् विश्व महारानी श्री लक्ष्मी तथा विश्व महाराजन् श्री नारायण पद को प्राप्त कर २१ जन्मों तक समस्त सुख-शान्ति-समृद्धि का भोग करोगे अर्थात् तुम स्वर्ग के अधिकारी बन जाओगे।"

यही कारण है कि ब्रह्माकुमारी संस्था के समस्त भाई व बहनें नित्य प्रति जल स्नान के बाद ब्रह्म मुहूर्त में स्वयं निराकार परमात्मा शिव द्वारा ब्रह्मातन के माध्यम से उच्चारित वाणी अर्थात् "ज्ञान मरली" का अध्ययन करते-कराते हैं, स्वयं दृढ़ प्रतिज्ञ रहते हैं कि हमें विकारों में नहीं फँसना है तथा नये आने वाले विद्यार्थियों से भी आग्रह करते हैं–"देओ विकारों रूपी दान तो छूटे ग्रहण।"

स्थूलधन से श्रेष्ठ संतोष धन

ब्र० कु० कमला प्रसाद, बस्ती

आज मनुष्य धन के पीछे मृगतृष्णा वश भटक रहा है। सुख की प्राप्ति के लिए अनेक अनुचित साधनों द्वारा धन इक्ट्ठा कर रहा है। जीवन निर्वाह हेतु उचित धन होते हुए भी प्रायः यह देखा जाता है कि मनुष्य धन कमाने के लिए अपने धर्म और ईमान को बेचता हुआ चला जा रहा है। परन्तु सच्चे अर्थों में सुख की प्राप्ति नहीं हो पाती है। क्योंकि स्थूल धन को साधन के रूप में न देखकर साध्य रूप में ही देखता है। जिसके कारण न तो सुख ही है और न तो शान्ति ही है। सुख की प्राप्ति बिना सन्तोष धन के कदापि नहीं हो सकती है। इसी से सम्बन्धित एक कहानी इस प्रकार है।

एक बार किसी नगर में अकाल पड़ गया। लोग भूखों मरने लगे। उस नगर के जमींदार ने नगर में यह कहलवा दिया कि मैं प्रतिदिन बच्चों को खाने के लिए रोटी बाटूंगा। हमारे यहां सभी बच्चे समय पर इक्ट्ठे हो जायें। सभी बच्चों के आने पर वह जमींदार अपने हाथों से दो-दो रोटी प्रत्येक बच्चे को देता था। किन्तु एक दस वर्षकी लड़की जो बड़ी ही भोली-भाली थी। एकान्त में खड़ी रहती, जब उसकी बारी आती तो अन्त में सबसे छोटी रोटी ले लेती थी। अन्य सभी बच्चे उसे धक्का देकर बड़ी-बड़ी रोटियां ले लेते थे। प्रतिदिन इसी तरह से शान्त होकर सबसे बाद में वह लड़की छोटी रोटी खुशी-खुशी लेकर घर पर अपनी माता जी को देती थी। उस घर में मां और बेटी के सिवाय और कोई भी नहीं था। दोनों रोटी खाकर भगवान् का गुणगान करते हुए सुख, शान्ति से सो जाते थे। इसी प्रकार एक दिन वह लड़की रोटी लेकर घर आयी। मां ने जब रोटी तोड़ी तो उसमें से सोने के तीन छोटे-छोटे दाने मिले। मां ने कहा – "बेटी इस रोटी में सोने के तीन छोटे-छोटे दाने हैं, ले जाकर जमींदार को दे आवो।"

लड़की ने कहा – "अच्छा मां, मैं अभी लेकर जाती हूँ।"

वह लड़की टूटे हुए रोटी में सोने के दाने रखकर जमींदार के पास पहुंची और कहने लगी – 'बाबू जी, यह लो अपने सोने के दाने।' जमींदार के आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि यह लड़की कैसे सोने के दाने देने के लिए आयी है! जमींदार के पूछने पर उस लड़की ने सारा किस्सा कह सुनाया। जमींदार सब कुछ सुनने के बाद उस लड़की को अपलक नजरों से देख रहा था। क्योंकि जमींदार जानता था, कि यह लड़की शान्त खड़ी होकर सबसे अन्त में छोटी रोटी लेकर चली जाती थी।

जमींदार ने कहा – "बेटी, तुम इसे ले जावो। यह तुम्हारे सन्तोष का फल है।"

लड़की ने उत्तर दिया – "बाबू जी, सन्तोष का फल तो मुझे पहले ही प्राप्त हो गया कि भीड़ में धक्के नहीं खाने पड़े।"

जमींदार यही सोचता था, कि बच्ची तो है छोटी, परन्तु बात बड़ी ही ऊंची और सयानी करती है। जमींदार के बहुत कहने-सुनने पर लड़की सोने के दाने को लेकर घर चली गयी। बाद में जमींदार ने खूब सोच समझकर उस लड़की एवं उसके माता को अपने घर बुलवा लिया। उसे धर्म-पुत्री बनाकर समूचे सम्पत्ति का उत्तराधिकार सौंप दिया। क्योंकि सन्तान हीन होने के कारण जमींदार को वैसे भी सन्तान की आवश्यकता थी।

कहने का भाव यह है कि स्थूल धन से श्रेष्ठ सन्तोष धन होता है। क्योंकि उस बच्ची को सन्तोष का फल कितना मीठा प्राप्त हुआ! वैसे ही परमपिता शिवबाबा कलियुग के अन्त में आकर हम बच्चों को सर्वोत्तम ज्ञान धन देकर आने वाले दैवी स्वराज्य का उत्तराधिकारी बना रहा है। जब कि आज का सुख दैवी स्वराज्य के सुख के तिनके के भी बराबर नहीं है। इसलिए हम बच्चों को चाहिए कि इस अन्तिम समय में विनाशी धन के पीछे न भागकर ज्ञान-धन, सन्तोष-धन अधिकाधिक अर्जित करें।

सबसे बड़ा पुण्य.... पृष्ठ २७ का शेष

पूछना–यह ऊपरी दिखावा है। वह और ही सेवा करने वाले के प्रति भी ईर्ष्या की भावना रखते हैं। परतु वह यह भूल जाते हैं कि यह परिस्थिति कभी उनके जीवन में भी आ सकती है या उन्हें भी कभी सहयोग की आवश्यकता पड़ सकती है। वास्तव में रोगी की 'स्थूल सेवा' द्वारा तन की और ज्ञान-योग' द्वारा मन की सेवा करना–यह सेवा देना नहीं अपितु २१ जन्मों के लिए स्वयं के तन-मन को निरोगी बनाना है। इसलिए यदि जीवन में इस प्रकार की सेवा का मौका मिले तो उसे अवश्य लेना चाहिए।

सावदा – में मठ के स्वामी भ्राता कृष्णागिरि को बी० के० शकुंतला राखी बाँध रही हैं।

काठमांडू (नेपाल) – बी० के० किरण बहन, रानी लक्ष्मी देवी राणा जी को राखी बांधने के पश्चात् प्रसाद दे रही हैं।

भिलाई नगर – बी० के० ऊषा बहन भ्राता ई० आर० सी० शेखर प्रबन्ध निर्देशक भिलाई नगर को राखी बाँध रही है।

पहाड़गंज (दिल्ली) – सेवा केन्द्र की ओर से लद्दाख बौध बिहार के सचिव लामा लौबजंग जी को बी० के० शील राखी बाँधने के पश्चात् ज्ञान चर्चा करती हुई।

अमरावती (महा०) – बी० के० सीता बहिन जिला कमिशनर भ्राता लखनपाल जी को पावन राखी बांधते हुए।

सिद्ध पुर – कोर्ट के मैजिस्ट्रेट एम० एल० मकवाना जी को बी० के० विजय राखी बाँध रही हैं।

फिरोजपुर कैन्ट – बी० के० ऊषा बहन सी० ई० ओ० को राखी बांध रही हैं।

बालासोर – बी० के० ऊषा बहिन भ्राता बी० एन० दास, ए० डी० एम० (जनरल) को पावन राखी बाँध रही हैं, साथ में बी० के० गीता बहिन खड़ी हैं।

भोपाल – भ्राता अशोक जी, भारत हैवी इलैक्ट्रीकल्स में एडमिनस्ट्रेटिव कांफ्रेन्स हाल में क्रियेटिविटी की क्लास कराते हुए, मंच पर माननीय डी० जी० एम० सा० एवं अन्य दिखाई दे रहे हैं।

ऋषिकेश – जन्माष्टमी के सुअवसर पर नवनिर्मित भवन का उद्घाटन करते हुए प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी टी० आर० काला जी, बी० के० प्रेम बहन तथा अन्य उपस्थित हैं।

साल्टलेक (कलकत्ता) – जन्माष्टमी के पावन पर्व पर मुख्य अतिथि साल्ट लेक कल्याण संघ के सम्पादक भ्राता सुधीर दत्त (मध्य में) उपस्थित हैं तथा उनके साथ दूसरे बी० के० बहन भाई बैठे हैं।

अशोक विहार (दिल्ली) – "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" बनाने के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में भ्राता दीप चन्द बंधु (नेता, सदन नगर निगम) सम्बोधित कर रहे हैं। मंच पर दादी हृदय मोहनी जी, बी० के० चक्रधारी बहिन तथा बंशीलाल चौहान (कार्यकारी पार्षद) उपस्थित हैं।

पहाड़गंज (दिल्ली) – महाबौधी सोसायटी ऑफ इन्डिया के आर्य वन्शा नायक महाथेरा जी को बी० के० शील बहन राखी बाँध रही हैं।

नवांशहर – बी० के० कृष्णा बहन एस० एम० ओ० भ्राता डा० आई० एस० गुजराल को पवित्रता सूचक राखी बाँध रही हैं।

शाहजहाँपुर – बी० के० शांति बहन जिला न्यायाधीश को पावन पवित्रता सूचक राखी बाधने के पश्चात् आत्मस्मृति का तिलक को लगा रही हैं।

राजनांदगांव – महराजपुर के प्रसिद्ध व्यापारी भ्राता भागचन्द सोमानी को बी० के० पुष्पा बहन राखी बाँधती हुई।

बोकारो – बी० के० अंजू बहन भ्राता समरेश सिंह (एम० एल० ए०) को राखी बाँध रही हैं।

गुलबर्गा – बी० के० विजय बहिन नूतन विद्यालय के अध्यक्ष भ्राता जगन्नाथ राव चन्द्र जी को पावन राखी बाँधते हुए।

हरिनगर (दिल्ली) में आध्यात्मिक संग्रहालय का उद्घाटन डा० एस० पी० शुक्ला (उपाध्यक्ष, मिग फेडरेशन जनकपुरी) ने किया चित्र में ब्र० कु० दादी चन्द्रमणी जी, ब्र० कु० दादी हृदय मोहिनी जी, व अन्य अतिथिगण खड़े हैं।

कटक – मानव के भविष्य पर ज्योतिषिकी संभाषण विषय के उपलक्ष्य में न्यायाधीश भ्राता हरिहर मोहापत्रा सम्बोधित कर रहे हैं।

दिलासपुर (म० प्र०) – रक्षा बंधन के शुभ अवसर पर भ्राता उदय वर्मा जी, जिलाध्यक्ष को राखी बाँधते हुए बी० के० गीता बहन।

अफजलपुर – बी० के० रंजना बहिन शिक्षक दिवस पर सभा को सम्बोधित करते हुए।

लुधियाना – में बी० के० सरस जिलाधीश भ्राता एस० एस० अरार को राखी बाँधने के पश्चात् प्रसाद देते हुए।

मुरादाबाद – भ्राता उदय प्रताप सिंह जिला कारागार अधीक्षक को बी० के० करतार बहन राखी बाँध रही हैं।

खेडब्रह्मा (गुजरात) – बी० के० ज्योति भ्राता चंपक लाल भंडारी-सिविल इन्जिनियर को राखी बाँध रही हैं।

गोण्डा – सेवा केन्द्र की ओर से जिला अधिकारी भ्राता रविन्द्र-नाथ श्रीवास्तव को बी० के० गीता बहन राखी बाँध रही हैं।

गुरदासपुर – बी० के० सुमन बहन भूतपूर्व उपमंत्री भ्राता खुशहाल बहल जी को पावन राखी बाँध रही हैं।

रोपड़ (पंजाब) – सिविल हॉस्पीटल रोपड़ के मुख्य चिकित्सा अधिकारी भ्राता कौर जी को बी० के० राजकुमारी बहन पवित्रता सूचक राखी बाँध रही है।

फिलौर – बी० के० राजकुमारी डी० ए० वी० कालेज के प्रिंसिपल भ्राता एम० एल० एयरी को पवित्रता सूचक राखी बाँधते हुए।

पाथर्डी (महाराष्ट्र) – रक्षाबंधन पावन पर्व के अवसर पर मंच पर (बाँये से दाँये) जैन संघ अध्यक्ष भ्राता अेड गुगले, बी० के० पुष्पा बहन, बी० के० उर्मिला बहन, तथा अन्य उपस्थित हैं।

दुबई – बी० के० ज्योति बहिन भारतीय परामर्श दाता (जनरल) भ्राता महाजन को राखी बाँध रही हैं।

साल्ट लेक (कलकत्ता) – बी० के० मिनाती बहिन विधान नगर कल्याण समिति के सचिव भ्राता सुधीर डे को पावन राखी के महत्व को समझाते हुए।

कलकत्ता – बी० के० गीता बहिन पुलिस के डी० जी० तथा आई० जी०, भ्राता निरूपम सोम को आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए।

आदिपुर – पुलिस स्टेशन इन्चार्ज पी० एस० आई० को बी० के० धनलक्ष्मी राखी बाँध रही हैं।

जामनगर – बी० के० सुषमा बहिन एयर कमांडर भ्राता बरार साहब को पवित्रता सूचक राखी बाँधते हुए।

महू – सेना के मेजर जनरल जे० सी० पन्त को बी० के० किरण बहन राखी बाँध रही हैं।

आबूपुर – बी० के० तारादेवी एयर कमाण्डर भ्राता बी० के० भाटिया जी को राखी बाँध रही हैं।

सिरसा – बी० के० नीलम बहन, जेल सुपरीटिन्डेन्ट भ्राता सदानन्द त्रिखा को पवित्रता सूचक पावन राखी बांधते हुए।

दिल्ली (लक्ष्मी नगर) सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र० कु० पुष्पा बहन भ्राता अमर सिंह, एस० एच० ओ० को राखी बाँध रही हैं।

नवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य

बी० के० अवधेश राजयोग भवन, भोपाल

समग्र विश्व के अन्यान्य देशों में भारत देश ही एक ऐसा देश है जिसका समूचा धार्मिक, सामाजिक इतिहास पवित्र एवं गौरवशाली धार्मिक गाथाओं से भरपूर है । यह वह पावन भूमि है जो कि न केवल मानव व देवताओं की कर्म भूमि या चरित्र भूमि रही है बल्कि अखिल ब्रह्माण नायक, विश्व के रचयिता स्वयं परमात्मा की ही अवतरण भूमि, चरित्र भूमि व कर्म भूमि बनती है । यही कारण है कि यहाँ का एक वर्ष और मास तो क्या अपितु, प्रत्येक दिन, तिथि ही किसी ना किसी विशेष आध्यात्मिक राज़ को आँचल प्रकोष्ठ में आत्मसात किये हुये है । इसी ऊहा-पोह में भारतीय-मानव-मन हर त्यौहार के आते ही थिरक उठता है कि अपने अतीत के उन सुखद क्षणों की अभिव्यक्ति कैसे ना कैसे हम जन सामान्य के समक्ष कर सकें । उन्हीं त्यौहारों, पर्वों और उत्सवों में से एक सर्वाधिक, चिर प्रचलित व महत्वपूर्ण उत्सव है "**नवरात्रि महोत्सव**" । तो आइये,आज हम इस पर्व से जुड़ी हुई कथाओं, कथानकों पर अपनी आध्यात्म दृष्टि डालें , उसके आध्यात्मिक राज़ को सर्व आत्माओं के समक्ष उद्घाटित करें ।

हमारा सबसे पहला विचार बिन्दु है कि इस "**नवरात्रि**" शब्द का सम्बोधन क्यों किया जाता है ? जैसा कि शब्द सन्धि विच्छेद(नव रात्रि)करने पर ही स्पष्ट होता है कि इसमें विचित्र राज़ भरा हुआ है । नव शब्द नया करने, परिवर्तन होने, सफलता की ओर प्रगतिशील उन्नति करने हेतु ही प्रयुक्त हुआ करता है । जबकि रात्रि शब्द बिल्कुल ही विषम लक्ष्य को अपने में छिपाये हुये है । जैसे रात्रि अर्थात् अन्धकार, दुःख, भटकन, भ्रम, अशान्ति का प्रतीक है । जबकि एक अनोखी बात ध्यान में आती है इसी क्रम में कि भल कृष्ण का जन्म अर्ध रात्रि को दिखाते हुए भी उसकी कृष्ण-रात्रि नहीं कहा जाता है । इससे सिद्ध है कि यहाँ रात्रि शब्द का प्रयोग कोई सीमित २४ घन्टों के दिन-रात्रि के क्रम से सम्बन्ध रखकर नहीं करते, बल्कि यह एक शब्द अपने अन्दर अतीत के गुह्य राज़ों को समाये हुये हैं । अंततः यह निष्कर्ष निकला – नवरात्रि शब्द जो है वह नव देवियों के श्रेष्ठाति श्रेष्ठ कर्मों की यादगार है । यही कारण है कि वर्ष में दो बार नौ शक्तियों की पूजा, अर्चना, बन्दना बड़े ही हर्षोल्लास से की जाती है । उन देवियों का चरित्र सोचिये कितना श्रेष्ठ होगा ! आखिर ऐसा कौनसा विशेष पुरुषार्थ उनका था कि जो उनके यादगार चिन्ह ये पाषाण प्रतिमायें पूजनीय बन गई हैं । तो शीघ्र ही उत्तर मिल जाता है पूजनीय बनने का आधार है "**पवित्रता**" । तो आइये,हम अब दूसरे विचार बिन्दुओं जैसे "नव-देवियों" का आध्यात्म से सम्बन्ध, वह कौन थीं, क्यों है उनका इतना अधिक गायन आदि पर दृष्टि डालें । इन शक्ति-रूपा देवियों में से सर्व प्रथम हम "महालक्ष्मी" के सम्पूर्णरूप के आध्यात्म पर प्रकाश डालेंगे ।

महालक्ष्मी – जिसके महान् लक्षण है वही हैं "**महालक्ष्मी**" । कहा ही जाता है "नर ऐसी करनी करे जो नारायण बन जाये और नारी ऐसी करनी करे जो लक्ष्मी बन पूजी जाये" । लक्ष्मी जी के अंग-प्रत्यंगों का आध्यात्मिक वर्णन ही उनके गुप्त पुरुषार्थ का द्योतक है । कहते भी हैं, कमल नयन, कमल मुख, कमल पद्, कमल कर । आखिर उनके आँखों आदि अंगों में कोई कमल लगा हुआ तो नहीं है ।

नयन – पवित्र दृष्टि, पवित्र वृत्ति का संकेतक है कि लक्ष्मी की आत्मा इस दुनिया में सर्व प्रथम पावन दृष्टि वाली आत्मा है । मनसा, वाचा, कर्मणा सम्पूर्ण रीति उनके पवित्र पुरुषार्थ को स्पष्ट करती हैं यह आंखें । जिस प्रकार कमल कीचड़ में जन्म लेकर भी न्यारा और अलिप्त है वैसे ही हमें भी अपनी निर्विकारी दृष्टि बनानी है ।

मुख – पवित्र वाणी का प्रतीक है।उनके द्वारा क्षमा, दया, नम्रता से ओत-प्रोत वाणी उच्चारित होती थी । अतएव नवरात्रि का आप सर्व के नाम संदेश है कि "पवित्र-स्नेह-युक्त वाणी" हो ।

लक्ष्मी जी का कर कमल – श्री लक्ष्मी को महालक्ष्मी अर्थात् चतुर्भुज रूप में दिखाते हैं । इसका अभिप्राय यही है कि २ भुजायें श्री लक्ष्मी और २ भुजायें श्री नारायण की यह प्रवृत्ति के युगल रूप का प्रतीक है जिसका भाव यही है कि भल दो आत्मा दो शरीर थे लेकिन विचार, स्वभाव, संस्कार, गुण कलायें, कर्त्तव्य दोनों ही एक समान थे । तभी सतयुगी स्वराज्य में सम्पूर्ण एकता थी । क्योंकि यह गायन है कि यथा राजा-रानी तथा प्रजा एक थे । और चारों ही भुजाओं में चार अलंकार दिखाते हैं । शंख, चक्र, गदा और पद्म ।

पद कमल – पवित्र चलन, श्रेष्ठ आचरण की ओर ईशारा करते हैं । आप सबको आज निराकार शिव पिता का संदेश देते कि आप भी श्रेष्ठ चरित्रवान बनने और बनाने हेतु प्रतिज्ञा बद्ध हो ईश्वरीय नियम प्रमाण ही कदम रखें ।

मुकुट व छत्र – जिम्मेदारी, पवित्रता की शक्ति और स्मृति का छत्र सदा सुशोभित रहे अर्थात् दैवी शक्ति से भरपूर होने

की एक मात्र चाबी पवित्रता व ईश्वरीय याद का बल जो करेगा हमारा जीवन सदा सफल ।

स्वदर्शन-चक्र – आत्मा के ८४ जन्मों का राज़ जानकर राज़युक्त कर्म करना अथवा श्रेष्ठ कर्म करना ही है स्वदर्शन चक्रधारी बनना ।

शंख – सदैव आप, हम सबको पवित्र, ज्ञान युक्त, मीठी वाणी बोलने का सुखद संदेश दे रहा है ।

गदा – ज्ञान युक्त जीवन बनाने वा मायावी विघ्नों पर विजयी बनने का आदेश कर रहा है । अर्थात् सबके नाम श्री लक्ष्मी की गदा का संदेर्श है निर्विघ्न भव ।

पद्म – हर कर्म को करते न्यारे रहें, न्यारा रह सम्बन्ध निभाने में है आपकी सदा जय-विजय ।

दुर्गा-शक्ति – अर्थात् "**दुर्गुणों का विनाश करने वाली**"।अतः आप सभी दर्गा के भक्तों, प्रेमियों और पुजारियों से हमारी एक ही अपील है, प्रार्थना है, आशा है कि आप सब अपने दुर्गुणों को निकालने की दृढ़ प्रतिज्ञा लें । **दुर्गा शक्ति** का "एक-एक" अंग-प्रत्यंग और अस्त्र-शस्त्र इनके संकेतक हैं कि संसार की आसुरी से आसुरी, दानवी शक्तियाँ भी उससे परास्त हो जाती । तो आइये, हम सब भी **ज्ञान रूपी तलवार** से काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार रूपी असुरों को सदा-काल के लिये समाप्त करने की पावन-प्रतिज्ञा में बंध जायें । आज भी कंस जरासन्धि जीवित हैं जिन पर **विजय** प्राप्त करने के लिए आप सभी के सहयोग की आवश्यकता है । पहिले भी देवियों के साथ देवताओं का सहयोग दिखाया गया तो आइये,आज भी आप सभी एक जुट होकर इस आसुरी-राज्य का अन्त करने, दुर्गा शक्ति प्रतीक इन्हों को (ब्रह्माकुमारी बहिनों) को अपना सहयोग प्रदान करें।

दुर्गा शक्ति की सिंह की सवारी इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि जब हम आत्माएं अपने क्रोध पर, कर्मेन्द्रियों पर विजय प्राप्त करेंगे तभी विश्व की आसुरी वृत्ति वाली आत्माओं के दिलों पर राज्य कर सकेंगे । दूसरी यही बात इस एक गुह्य राज़ का उद्घाटन कर रही है कि पवित्रता से निर्भयता का गुण अपने आप आ जाता है । निर्भयता के आधार पर ही सत्य कर्म होंगे । हे देवियों की प्रत्यक्षमूर्ति बहिनो, माताओं अब आप अबला नहीं,सबला हो, बकरी नहीं शेरनी शक्ति हो। उठो, आप स्वयं को, समय को पहिचानो, संकुचित विचारों रूपी शेर पर शासन जमाओ, बेहद दृष्टिकोण अपनाओ, विश्व-कल्याण कार्य में एक-जुट होकर लग जाओ ।

शक्ति की साक्षात्मूर्ति दुर्गा जी को माला दिखाते है जो इस बात का ही द्योतक है कि याद की शक्ति द्वारा सारे विश्व की आत्माओं में उन्हें विशिष्ट स्थान मिला । अर्थात् आप कलियुग केवल नाम आधारा के मन्त्र-मूर्त या "मनमनाभव" स्वरूप बनें अर्थात् श्वासों श्वाँस उस परमपिता को निरन्तर याद के अभ्यासी बनें तो सदा-सदा विजयी रहेंगे । इसलिये दुर्गा जी को शिव शक्ति भी कहा जाता है । इतना ही नहीं दुर्गा शक्ति के हाथों में **धनुष और बाण** भी सुशोभित हो रहे हैं जो मुख कमल रूपी धनुष द्वारा ज्ञान युक्त वचन ओज और कल्याण से समन्वित वाणी निकालें यह संदेश देते हैं । श्री दुर्गा देवी को सदैव अष्टभुजाधारी दिखाया जाता है जिसका भी गुह्य अर्थ है । अष्ट भुजाओं में अष्ट अलंकार सुशोभित हैं । संसार में आज भी कोई आठ-दस भुजा वाली शक्ति व व्यक्ति को नहीं देखा या पाया जा सका है । अर्थात् स्पष्ट है कि भुजा-शक्ति का प्रतीक है । अष्ट भुजाओं में अष्ट शक्तियां हैं जिसमें सहन करने की शक्ति, समाने की शक्ति, समेटने की शक्ति, सहयोग शक्ति, सामना करने की शक्ति, परखने की शक्ति आदि मुख्य हैं ।

सन्तोषी देवी – इसी प्रकार सन्तोषी देवी जो हर परिस्थिति में किसी भी प्रकार के भाव-स्वभाव वाले व्यक्ति के साथ सदा ही सन्तुष्ट रहने वाली । सन्तुष्टता का आधार साधनों व धन सम्पत्ति,वैभव से नहीं अपितु सदा ज्ञान रत्नों से भरपूर हों । विश्व कल्याण की भावना हो तभी सन्तुष्टि आ सकती है ।

सन्तुष्टता के लिए कहावत है: –

गोधन गजधन वाजधन,
और रतन धन खान ।
जब आवे सन्तोष धन
सब धन धूल समान । ।

वैष्णो देवी – सदा मायावी विषय विकारों से दूर रह सर्व को विकारों की जंजीरो से मुक्त कराने वाली ही वास्तव में वैष्णो देवी है ।

उमा देवी – सदा विपरीत परिस्थिति में भी उमंग-उत्साह में रह कर हर कर्म में सफलता लाने वाली ही उमा देवी है ।

मीनाक्षी देवी – मीनाक्षी देवी अर्थात् ज्ञान का तीसरा नेत्र प्रदान करने वाली,सर्व को ज्ञान नेत्र से उसके आदि-मध्य-अन्त को जान कर आगे बढ़ाने वाली ही मीनाक्षी देवी है ।

काली देवी – काली अर्थात् विकराल रूपधारी शक्ति । कलुषित भावनाओं व संस्कारों को काली रूप बन कर भस्म करने वाली काली ने कोई व्यक्ति या बकरे की बलि नहीं ली किन्तु मैं-मैं करने वाला देह अभिमान की बलि ली । परन्तु मनुष्यों ने विकारों की बलि देने की बजाय बकरे की बलि की प्रथा चालू कर दी है । क्योंकि विकारों को छोड़ना मुश्किल है । बकरे की बलि चढ़ाना सस्ता सौदा है ।

गायत्री देवी – गायत्री देवी अर्थात् गीतों के माध्यम से गुणगान सुना-सुना कर असुरों से देवता बनाने वाली ही गायत्री देवी है । मुख वही सार्थक है जो भगवान के गुणगान के सदा ही गीत गाकर सर्व के दिलों को भगवान से जुड़ा दे । ऐसी वरदानी महादानी गायत्री देवी है ।

शीतला देवी – सदैव शीतल, शान्त मन से सर्व की मानसिक अशान्ति को मिटाने वाली अर्थात् सच्ची शान्ति का अनुभव कराने वाली देवी है ।

सरस्वती देवी –सदा ही ज्ञान की वीणा धारण करने वाली हरेक दिल पर विराजमान रहने वाली । इसका यही अभिप्राय है कि सर्व को ज्ञान सुनाकर सर्व समस्याओं का निदान करने वाली । ज्ञान से सदा भरपूर करने वाली तथा हर समय गुणों को धारण करने की अवगुणों से दूर रहने की प्रेरणा देने वाली सरस्वती देवी है । जो ब्रह्मा के मुख कमल से ज्ञान सुनकर पैदा हुई । अर्थात् सदा ही ब्रह्मा का अनुसरण कर सर्व का जीवन सच्चा, पवित्र, ब्रह्मचर्य व्रतधारी बनाकर ब्रह्मा की सच्ची बेटी कहलायी ।

कल्प-कल्प की बाजी

कल्प-कल्प की यह बाजी है
इसको मत खो देना।
तन-मन-धन बाबा को दे,
श्रेष्ठ कर्मों का बीज बो लेना।।

कल्प पहले जो हुआ था
वही फिर से रिपीट हो रहा हैं।
चिन्ता छोड़ प्रभु चिन्तन कर,
संगम का समय व्यतीत हो रहा है।।

भगवान् आये हैं भाग्य बनाने
तू अपना भाग्य चमका ले।
हीरे जैसा जीवन बीता जा रहा है,
यह सन्देश सभी को सुना दे।।

कल्प पहले वाली मैं आत्मा बाबा की,
बाबा मेरा, यह धुन लगा दे।
वाह ड्रामा! वाह ड्रामा!
यह गीत गा कर बाबा को सुना दे।।

ब्र० कु० लीलावती, कृष्णा नगर, दिल्ली

'सबसे बड़ा पुण्य'

ब्र० कु० अरुणा, राजौरी गार्डन, दिल्ली

किसी से प्रश्न पूछा गया कि पाप और पुण्य की परिभाषा क्या है? तो उत्तर मिला–किसी 'रोते को हँसा देना' सबसे बड़ा पुण्य है और किसी हँसते को रुला देना सबसे बड़ा पाप है।

जी हाँ, यूँ तो जीवन में अनेक ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं जिसमें मनुष्य स्वयं से निराश हो जाता है। उन अनेक परिस्थितियों में एक परिस्थिति आती है 'बीमारी'। और जब बीमारी का रूप अति भंयकर या असहनीय हो तो निराशा और भी अधिक हो जाती है। ऐसे में रोगी के मन में कई बार विचार आने लगते हैं कि –'हे ईश्वर! या तो मुझे इस दुनिया से उठा ले या मेरे रोग को दूर कर दे !' ऐसी अवस्था में उसे आशा की किरण दिखाई देती है तो डॉक्टर से। इसलिए कहा जाता है Doctor is next to God.

यूँ तो सबसे बड़ा पुण्य यही है आत्मा का सम्बन्ध परमात्मा से जुटा देना । उसके पश्चात् यदि दूसरा नम्बर कहा जाए तो वह है– किसी रोगी की सेवा करना बशर्ते कि वह सेवा निःस्वार्थ भावना से और प्रेम से की जाए। ऐसी सेवा से रोगी के दिल से सेवा करने वाले के प्रति दुआएं निकलती हैं, वह उस आत्मा का एहसान जिंदगी भर नहीं भूल सकता और वह सदा इसी प्रयास में रहता है कि मैं उसकी सेवा का रिटर्न कैसे दूँ? और यदि सेवा करने वाला चिढ़ कर, स्वार्थ की भावना से, बदले में कोई कामना रखकर या केवल एक डयूटी समझकर सेवा करता है तो रोगी उस सेवा से भारी हो जाता है और सोचता है कि वह उसका एहसान न ही ले तो अच्छा है।

यह आवश्यक नहीं कि रोगी की केवल स्थूल सेवा से ही दुआयें कमाई जा सकती हैं बल्कि ऐसे समय में सहानुभूति के शब्दों द्वारा भी उसे ढाढ़स बंधाया जा सकता है। तभी तो दूर रहने वाले, रोगी को स्वस्थ रहने की कामना हेतु शुभ भावनाएं (Greeting cards) भेजते हैं। ऐसा करने से रोगी के तन का रोग कम तो नहीं होता परंतु उसके मन में उत्पन्न हुआ निराशा का दर्द सहानुभूति के शब्दों रूपी मलहम से कम अवश्य हो जाता है।

कई बार कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि रोगी को

शेष पृष्ठ १९ पर

"शक्ति का स्रोत युवा"

ब्र० कु० रवि चन्द्र नेगी, शिमला

मानव मात्र की उन्नति और सामाजिक परिवर्तन के लिए युवा शक्ति सबसे बड़ा स्रोत है। जिस प्रकार पर्वतों पर ढकी बर्फ जल का स्रोत है, जैसे शीतल शाँत वैसे ही भयानक भी है। युवा शक्ति भी उस हिम, उस नीर की तरह है जिसे सही दिशा की आवश्यकता है।

आज का युग जहाँ बेमिसाल समस्याओं से जकड़ा हुआ है, दुःख, अशान्ति, भ्रष्टाचार और समस्याओं रूपी सागर में डूबता जा रहा है। चारों ओर अभाव ही अभाव है।परन्तु युवा शक्ति का कोई अभाव नहीं जिस द्वारा इस विश्व को ऊपर लाया जा सकता है। कठोर परिश्रम कर, देश भक्ति तथा, विश्व बन्धुत्व तथा सेवा भावना द्वारा इस विश्व को सुखमय संसार बना सकते हैं। अपनी असीमित शक्ति के उपयोग के द्वारा समाज देश एवं विश्व को उच्च शिखर पर ले जा सकते हैं। यह वह शक्ति है जिससे स्वप्न को साकार कर सकते हैं, असंभव को सम्भव कर सकते हैं। युवा ही जीवन का वह सर्वश्रेष्ठ भाग जहाँ उमंग और उत्साह सर्वोच्च होता है। विश्व को भयानक समय से निकाल रंगीन बना सकते हैं। ज्वाला को शीतल, खूनी क्राँन्ति को रक्तहीन शान्ति में लाना युवा शक्ति के लिए सहज है। यही शक्ति एक वरदान में परिवर्तन हो अनेकों के लिए वरदानी रूप बन सकती है। इस वरदान को विकृत संकल्पों के द्वारा अभिशाप के रूप में परिवर्तन होने से बचाना सभी बुद्धि जीवी नागरिकों का मूल कर्त्तव्य है। कितनी विशाल और श्रेष्ठ कल्पना और रचना युवा भविष्य में कर सकता है।

युवा काल ही जीवन का वह अति मीठा और श्रेष्ठ भाग होता है जहाँ किसी भी प्रकार के त्याग करने में संकोच नहीं। युवा काल का एक उच्च, आदर्श निर्णय हजारों लाखों के लिए एक सही आदर्श बन जाता है। युवा काल की महानता की महीनता को न जानने के कारण आज तक युवा की इस शक्ति का उपयोग नहीं हो सका। शक्ति की प्रत्यक्षता भी तभी हो पायेगी जब शक्ति की ज्वाला को समझ सकेंगे। युवा अपनी शक्ति की प्रत्यक्षता में विश्वास रखता है न कि उसे वर्णन करने तक। युवक ही मन में शुद्ध संकल्प, मधुर वचन, नयनों में आत्मिक भाई चारे की भावना रख अपनी शक्ति को एक ऐसे सही साँचे में डाल स्वयं परिवर्तन हो एक नया मोड़ काल के आने वाले युवाओं को दे सकता है। इस लिए युवकों का समय पर सभी दोषों से मुक्त कर आत्मिक जागृति लाना अति आवश्यक है, बुद्धि जीवी नागरिकों को, साहित्यकारों को इस अथाह शक्ति से भरपूर युवाओं को मार्ग दर्शन कर भविष्य को स्वर्णिम आशाओं से भरपूर कर प्रगति की और अग्रसर करना होगा।

तकदीर जगाने का साधन

तकदीर जगाने का साधन है यह पढ़ाई।
अनोखी और अद्भुत यह रूहानी पढ़ाई।
आत्मा की परमात्मा से कराती यह सगाई।
२१ जन्मों की प्राप्ति कराती यह पढ़ाई।। १ ।।
इस पढ़ाई में ना खर्चा लगाता कोई।
बच्चों से बूढ़े तक आकर यहाँ पढ़ते यह पढ़ाई।
इसमें है बहुत बड़ी अविनाशी कमाई।
ना इसे कोई लूट सकता ना कोई गँवाई।। २ ।।
अमृतवेले उठकर योग से कमाई।
पापों को तुम भस्म करो और प्राप्त करो राजाई।
बाबा से तुम बातें करो और ले लो दुवाई।
अगर कोई है रोग तुम्हें तो कर लो दवाई।। ३ ।।
अगर आती है माया तो तुम करो लड़ाई।
याद की शक्ति से अब तुम उसकी करो धुलाई।
सोते रहोगे तो तुम्हारी होगी गंवाई।
आलस अलबेलापन छोड़ो,करो योग से चढ़ाई।। ४ ।।
निर्माण बनो और मत मांगो किसी से बड़ाई।
छोड़ो अहंकार तुम और छोड़ो बुराई।
मीठा बोलो सबसे तुम ना सुनो बुराई।
शुभचिंतक बनो सबके और सोचो भलाई।। ५ ।।
अब घर चलना है तो सुन लो बहनो भाई।
माया रावण से कर लो सदा के लिये विदाई।
सतयुगी नयी दुनिया अब है आई कि आई।
बाबा, नवयुग की देते हैं मुबारक, बधाई ।। ६ ।।
क्लास में समय पर आवो बहनों और भाई।
करो योग का अभ्यास और सुनो मुरली जादुई।
मुरली यह ज्ञान की जो शिवबाबा ने सुनाई।
अब ध्यान रखो बाबा ने तुम्हारी तकदीर जगाई। ७ ।
तकदीर जगाने का साधन है यह पढ़ाई।
अनोखी और अद्भुत यह रूहानी पढ़ाई।।

ब्र० कु० किशोर, बम्बई

बम्बई – के महापौर भ्राता चन्द्रकात पडवल जी को बी० के० गीता राखी बांधते हुए।

भरतपुर (राज०) – बी० के० कविता भरतपुर के जिला अधिकारी भ्राता जी० एस० संधु को राखी बाँधने के पश्चात् विश्व सहयोग बैंक की जानकारी देते हुए दिखाई दे रही हैं।

महबूब नगर – आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट के न्यायाधीश आंजनेयुलु को बी० के० नीरा आत्म स्मृति का तिलक देते हुए।

दिल्ली (शक्तिनगर) – बी० के० रानी बहन, एक्जीक्यूटिव काउंसलर (शिक्षा) भ्राता कुलानंद भारती को राखी बांधने के पश्चात् प्रसाद देती हुई।

फिरोजाबाद – श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर चेतन्य राधाकृष्ण की झांकी सजाई गई जिसमें हजारों आत्माओं ने लाभ लिया।

मेहतवाड़ा (भोपाल) – श्री कृष्ण जन्माष्टमी के सुअवसर पर श्री कृष्ण लीला एवं प्रवचन समारोह का उद्घाटन सरपंच भ्राता नरवस सिह ठाकुर ने किया। बी० के० माया बहिन तथा अन्य बहिनें भी दिखाई दे रही हैं।

फरीदकोट – में बी० के० प्रेम बहन भ्राता एच० एल० कुमार को राखी बाँध रही हैं।

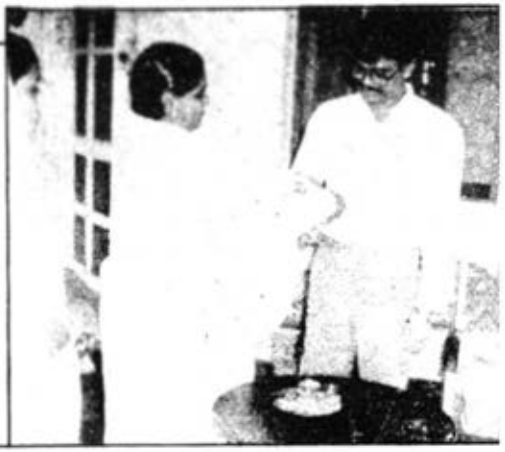

रायगढ़ – बी० के० चित्रा बहन, जिलाधीश भ्राता पी० के० दास को पवित्रता सूचक पावन राखी बांध रही हैं।

बहिन, नगर विकाश पदाधिकारी भ्राता शिवदास पाण्डे को राखी बाँध रही हैं।

साउथ एक्स० (दिल्ली) – बी० के० सरोज बहिन सीमेन्ट तथा भवन निर्माण के राष्ट्रीय परिषद के अध्यक्ष तथा प्रबंधक निर्देशक भ्राता डा० विश्वेश्वरिया को राखी बाँधते हुए।

मालवीय नगर (दिल्ली) – बी० के० भाग व बी० के० पुष्पा बहिन नागालैण्ड सरकार के परामर्श दाता भ्राता एम० ए० काम्पनी के साथ खडे हैं।

मेघालय – बी० के० नीलम बहिन मेघालय के मुख्य सचिव भ्राता वी० रामाकृष्णा को राखी बाँध रही हैं।

शालीमार बाग (दिल्ली) – बी० के० कृष्णा बहिन जन्माष्टमी के अवसर पर एक भव्य शोभा यात्रा में क्षेत्रीय निगम पार्षद भ्राता राजेश यादव को, यात्रा का लक्ष्य समझाते हुए।

बालेश्वर – बी० के० गीता विद्यालयों के निरीक्षक, भ्राता जगन्नाथ पटनायक जी को राखी बाँधने के पश्चात् आत्म स्मृति का तिलक दे रही हैं।

चित्रदुर्ग – बी० के० अनुसुइया डिप्टी कमिश्नर श्री रामाशेशन को राखी बाँधने के बाद स्मृति तिलक दे रही हैं।

बोकारो – बी० के० कुसुम बहिन, सेवा केन्द्र पर एक्जीक्यूटिव डाइरेक्टर (बी० एस० एल०) भ्राता सुब्रतराय को शिव संदेश देने के पश्चात् राखी बाँध रही हैं।

बरनाला – सेवा केन्द्र की ओर से बी० के० बृज एस० डी० एम० भ्राता के० के० शर्मा को राखी बाँध रही हैं।

मद्रास – डा० बहिन ललिता कामेश्वरन एम० जी० आर० मेडिकल विश्व विद्यालय की उपकुलपति, ईश्वरीय सेवा केन्द्र पर राखी के उपलक्ष्य में पधारी जहाँ उन्हें सर्व के सहयोग से सुखमय संसार, कार्यक्रम समझाया गया।

आशा बहन तथा बी० के० छाया बहन, आदम जाति कल्याण विभाग के भ्राता चरण मोह नियाजी को श्री कृष्ण का चित्र भेंट करते हुए।

जगरावां – बी० के० अमर ज्योति, एस० डी० एम० जी को पावन राखी बाँध रही हैं।

नवसारी – बी० के० गीता बहन रक्षाबंधन के पावन पर्व पर कृषि कालेज के केम्पस डाइरेक्टर भ्राता तुलसी दास भक्त जी को राखी बांधते हुए।

कक्कर – सेवा केंद्र की इंचार्ज बी० के० शक्ति बहन एस० डी० एम० सरदार बलबीर सिंह को राखी बांधती हुई।

पाण्डिचेरी – बी० के० अरूणा बहिन मुख्यमंत्री भ्राताथीरू एम० ओ० एच० फारूक को राखी बाँध रही हैं।

बांदा – भ्राता बसन्त बल्लभ पान्डेय जिलाधिकारी बांदा को राखी बाँधने के पश्चात् आत्म स्मृति का तिलक देती हुई बी० के० दुलारी बहन।

बारीपदा – बी० के० सावित्री बहन, मयूर भंडा जिला के अतिरिक्त जिलाधीश भ्राता सोमनाथ जेना जी को पवित्रता सूचक राखी बाँधते हुए।

भिवानी – बी० के० नारायणी बहिन सिटी मजिस्ट्रेट भ्राता आर० पी० भारद्वाज (एच० सी० एस०) को पावन राखी बाँधते हुए।

फतेहपुर – भ्राता महेन्द्रसिंह जिलाधिकारी को राखी बाँधने के पश्चात् बी० के० दुलारी बहन साहित्य भेंट कर रही हैं।

नलबारी – बी० के० किरण बहिन, अतिरिक्त मुख्य चिकित्सा तथा स्वास्थ्य अधिकारी भ्राता डा० अश्विनी को राखी बाँधते हुए।

कलकत्ता — बी० के० पुष्पा बहिन मेयर भ्राता कमल बोस को पावन राखी बाँधते हुए।

दार्जिलिंग में डी० एम० भ्राता डी० पी० पत्रा को साहित्य भेंट करते हुए बी० के० स्वदर्शन बहन।

होडल सेन्टर — जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में वकील सुभाष मित्तल म्युनीसपल कमेटी के चेयरमैन सपरिवार चेतन्य झांकी का अवलोकन करते हुए।

पालमपुर — राखी बाँधने के पश्चात् एस० डी०एम० भ्राता अमर सिंह राठौर तथा अन्य बी० के० बहन भाई।

मोगा — बी० के० वीना तथा बी० के० संजीवन बहन वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी भ्राता डा० अमृत सिंह जी एवं अन्य डाक्टर स्टाफ को राखी बांधने के पश्चात् खड़े दिखाई दे रहे हैं।

पठान कोट — सेवा केन्द्र की ओर से एस० एम० ओ० भ्राता जी० एल० कुकरेजा जी को राखी बाँधने के पश्चात् अन्य भाई-बहनों के साथ खड़े हैं।

नासिक — बी० के० गीता बहन प्राचार्या बहन एन० आर० रावल को आत्मिक स्मृति का तिलक लगाती हुई, योगदृष्टि देती हुई ब्र० कु० विष्णी दादी जी।

कलकत्ता — बी० के० पुष्पा बहिन भ्राता भूपेन्द्र नाथ डे को पावन राखी बाँधते हुए।

जगदीश चन्द हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ओम शान्ति प्रैस, कृष्णानगर, देहली-५१ से छपवाया Regd No. 10563/65-D. (E)—70